ISSN 2349-6614

अक्टूबर 2021

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

पैरालम्पिक
रचा स्वर्णिम इतिहास

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 19 अंक 6, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

SANDAL JEWELLERS

SJ Sandal Jewellers

We are deal only hallmark Jewellery | **Gold purity 91.6 22/22K**

Exclusive light weight Gold Jewellery

1. Government Approved Jewellery
2. Gold purity testing by carat machine.
3. Swarn yojana deposit scheme starting at 1000 rupees. Pay 11 installment and get 1 installment free & pay 21 installment and get 3 installment free free free

INTERNATIONAL GEMOLOGICAL INSTITUTE

IGI

Exclusive light weight Diamond Jewellery

1. All Diamonds are tested international Gemological Institute tested (IGI).
2. Exclusive design Jewellery, High category Diamond Purity vvs, vs (Super deluxe, deluxe) & colour F, G, H (white & offwhite)

Head Office:

Sandal Jewellers
677-678 Chetak Marg, Udaipur-313001
Phone: 0294-2423533, 2425712, Mobile: 9414168712
Email: sandal.udaipur2009@gmail.com

Branch Office:

62-Moti Chohatta, Clock Tower
Udaipur (Raj).
Phone: 0294-2421012,
Mobile: 7737792247

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

अक्टूबर 2021 वर्ष 19, अंक 6

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

अंदर के पृष्ठों पर...

विश्लेषण

तालिबानी अंदाज में महबूबा 10

फेरबदल

गुजरात में भी बदला भाजपा का चेहरा 12

परम्परा

सुखी व सफल दाम्पत्य की मंगलकामना का पर्व करवा चौथ 22

चिंतन

वन-धन से वंचित वनवासी 34

शोध

51 करोड़ साल पहले हुई पौधों की उत्पत्ति 37

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

0294-2522108 (ऑफिस)
0294-2416281 (निवास)

भंवरलाल खटीक
एम.डी.
94141-67281

हेमेन्द्र खटीक
डायरेक्टर
9887111453

धर्मेश खटीक
डायरेक्टर
9829511888

प्रगति रियल मार्ट प्राइवेट लिमिटेड
भंवर सेवा संस्थान
स्व. सुशीला देवी खटीक चेरिटेबल ट्रस्ट

7, गुलाबेश्वर मार्ग, गली नम्बर 5, हाथीपोल, उदयपुर (राज.)

Mewar B.Sc. Nursing College

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

मेवाड़ बी.एस.सी. नर्सिंग कॉलेज, उदयपुर

सूर्या नगर, तितरड़ी रोड, पटवार मण्डल के पीछे, सवीना, उदयपुर (राज.) 313001

Website: www.mewarnursingcollege.org Email ID: mbncollege1234@gmail.com

(राजस्थान सरकार, INC एवं राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ सांइस, जयपुर से मान्यता प्राप्त)

ADMISSION OPEN 2021-22 SESSION

B.SC NURSING- 4 YEAR COURSE

- लड़कियों के लिए हॉस्टल की सुविधा उपलब्ध है।
- सरकारी एवं निजी अस्पताल में प्रशिक्षण की सुविधा।
- केन्द्र व राज्य सरकार में श्रेष्ठ परिणाम देने वाला संस्थान

प्रवेश योग्यता

10+2 उत्तीर्ण (science Biology) General-45%,SC/ST- 40%
(SC/ST, SBC & OBC BPL हेतु
SCHOLARSHIP सुविधा)

मों.नं. 9414156215, 9828059360,
9928003243, 9829042499

एडमिशन हेतु संपर्क करें:
9214915054, 9983469877

जाति की जकड़बंदी में राजनीति

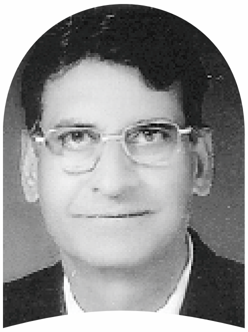

भारत में जातिगत जनगणना की मांग एक बार फिर जोर पकड़ रही है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव सहित कई नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर जातीय जनगणना की मांग उठाई है। कई अन्य क्षेत्रीय दल भी 2021 की जनगणना में जातिवार आंकड़ें जारी करने की पैरवी कर रहे हैं। वर्तमान में राजनीति की जो दिशा है, उसमें जातिगत जनगणना के पक्ष में माहौल बनना स्वाभाविक है। इस मांग के गहरे सियासी मायने हैं, यह उस प्रदेश से दिल्ली पहुंची हैं, जो विकास के ज्यादातर पैमानों पर देश में सबसे पीछे है। बिहार के राजनीतिक दल जातिगत जनगणना के लिए एकमत नजर आ रहे हैं। 23 अगस्त को बिहार में सक्रिय 10 राजनीतिक दलों के नेताओं के प्रतिनिधिमण्डल ने प्रधानमंत्री से मुलाकात कर मांग की कि केवल बिहार ही नहीं, पूरे देश में जातिगत जनगणना होनी चाहिए। इस मांग का वजन इस बात से भी बढ़ जाता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ ही नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव, हिन्दुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) से पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी, भाजपा की ओर से बिहार में मंत्री जनक राम भी शामिल थे। मतलब, भाजपा, कांग्रेस, जद-यू, वामपंथी, दलित, पिछड़े नेता जातिगत जनगणना के पक्ष में हैं।

नीतीश के अनुसार विभिन्न जातियों से संबंधित आंकड़े प्रभावी विकास योजनाएं बनाने में मदद ही करेंगे। जातिवार जनगणना की मांग नई नहीं है। लम्बे समय से इसकी मांग हो रही है। पिछली यूपीए सरकार के समय भी इस मांग ने जोर पकड़ा, तो जातिवार जनगणना कराई गई थी। मगर उसके आंकड़े प्रकाशित नहीं किए गए। अब तो सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि वह जातिवार जनगणना के पक्ष में नहीं है। हालांकि कुछ दिनों पहले ही केन्द्र सरकार ने संविधान संशोधन करके अन्य पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण का अधिकार राज्य सरकारों को सौंप दिया। यानी अभी तक इससे जुड़े मामलों पर निर्णय की जो जिम्मेदारी केन्द्र पर थी, वह अब राज्यों को मिल गई है। केन्द्र अब इस झगड़े से मुक्त है। वैसे जातिगत जनगणना के फायदे भी हैं और नुकसान भी। क्या इसके फायदे उठाने की समझदारी हमारे राजनीतिक दलों में पर्याप्त है ? क्या इससे होने वाले नुकसान को संभालने के लिए भी वे तैयार हैं ? क्या जातिगत आंकड़े दुरुस्त न होने के कारण जन-कल्याणकारी योजनाओं या आरक्षण देने में कोई परेशानी आ रही है ? हमारे यहां चुनाव के समय ही जातिगत आंकड़ों की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। सबसे बड़ा खतरा यही है कि आंकड़े स्पष्ट होंगे, तो उनका इस्तेमाल भी बढ़ेगा। पिछली जाति आधारित जनगणना 1931 में हुई थी और उन्हीं आंकड़ों के आधार पर कटु सियासत होती रही। खतरे को अंग्रेज भी समझ गए थे, इसलिए साल 1941 में जातिगत जनगणना तो की गई, लेकिन आंकड़े सार्वजनिक नहीं किए। 2011 में भी सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना की गई थी, लेकिन सरकार ने आंकड़े जारी नहीं किए। कायदे से अगर साल 2011 के आंकड़े भी जारी हो जाएं, तो राजनीतिक दलों का मकसद शायद पूरा हो जाना चाहिए। हां, जाति व्यवस्था के अध्ययन और सामाजिक आर्थिक विकास के योजनाकारों के लिए ये आंकड़े उपयोगी होंगे। जातीय जनगणना की मांग तेज होने के बीच यह सवाल भी उठा है कि 2011 में हुई जातीय जनगणना के आंकड़ों को सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया। दरअसल, इसके पीछे कई कारण रहे हैं। मुख्य कारण कानूनी अड़चन थी। भारत के जनगणना आयुक्त के पास जनगणना के आंकड़े जारी करने के कानूनी अधिकार नहीं थे। अभी भी यदि जातीय जनगणना होती है तो पहले इसके लिए जनगणना अधिनियम में संशोधन करना पड़ेगा। 2011 की जिस जनगणना को जातीय जनगणना कहा जाता है, मूलतः वह सामाजिक आर्थिक जातीय जनगणना (एसईसीसी) थी। यह 2011 में हुई मुख्य जनगणना के बाद जून-जुलाई में हुई थी। इसे ग्रामीण विकास एवं शहरी विकास मंत्रालयों ने संयुक्त रूप से कराया था। मकसद सामाजिक-आर्थिक आंकड़े एकत्र करना था, जिसका आज भी कई योजनाओं में इस्तेमाल हो रहा है।

एक सभ्य और सशक्त लोकतांत्रिक देश की राजनीति अब भी जाति के इर्द-गिर्द ही घूम रही है। राजनीतिक दल और सामाजिक संगठन जाति का बंधन तोड़ने के लिए आंदोलन करते रहते हैं, मगर जैसे ही वोट बैंक बनाने की बारी आती है, सब जातीय समीकरण बिठाने में जुट जाते हैं।

चुनावों में टिकटों के बंटावारे जाति के आधार पर होते हैं। यह ठीक है कि नौकरियों और भर्तियों में जाति के आधार पर ही पैमाने तय हैं, मगर इस आरक्षण के औचित्य पर भी व्यावहारिक ढंग से सोचने को कोई तैयार नहीं है। दरअसल, ज्यादातर क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व जाति के आधार पर ही बना और बचा हुआ है, इसलिए वे किसी भी रूप में इस जाल को तोड़ना नहीं चाहते। यहां तक कि राष्ट्रीय दल भी इसके खिलाफ जाकर कोई जोखिम मोल लेने को तेयार नहीं। ऐसे में जाति की जकड़बंदी हमारी देश से निकट भविष्य में खत्म होती तो नजर नहीं आती। फिर भी देखना है कि केन्द्र इसमें क्या रूख अपनाता है।

नए राजस्थान को साकार करता जन घोषणा पत्र

जन घोषणा पत्र राजस्थान सरकार के नीतिगत दस्तावेज के साथ ही प्रदेश के विकास को गति देने का विजन डॉक्यूमेंट भी है। इससे राजस्थान की परिकल्पना को साकार किया जा रहा है। राजस्थान को गति प्रदान करने के लिए राज्य सरकार ने जन घोषणा पत्र के अनुसार विकास को आधार बनाया है।

रामेन्द्रसिंह सोलंकी

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने आमजन के विश्वास पर खरा उतरने के लिए मंत्रिमंडल की पहली बैठक में जन घोषणा पत्र को सरकारी दस्तावेज के रूप में शामिल करते हुए अधिकारियों को विजन डॉक्यूमेंट के अनुरूप कार्य करने के निर्देश दिए थे।

सरकार जन घोषणा पत्र की 501 घोषणाओं में से लगभग 64 प्रतिशत घोषणाओं को पूरा कर 138 घोषणाओं पर कार्य कर रही है। इस जन घोषणा पत्र के माध्यम से प्रदेश की जनता के हर वर्ग को छूने का प्रयास किया गया है। हालांकि वर्तमान समय में राज्य सरकार को कोरोना जैसी महामारी के बीच कई कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन विकास को थमने नहीं दिया गया।

मुख्यमंत्री ने सेवा और सुशासन को केन्द्र बिन्दु मानते हुए न केवल जन घोषणा पत्र की घोषणाओं को मूर्त रूप दिया है बल्कि इससे आगे बढ़कर जनता को राहत देने के लिए अनेक महत्वपूर्ण फैसले भी लिए हैं। कोरोना की पहली एवं दूसरी लहर के बावजूद घोषणाओं को धरातल पर उतारने में सरकार खरी उतरी है। केबिनेट सब-कमेटी जन घोषणा पत्र के क्रियान्वयन की सतत मॉनिटरिंग करती है। किसानों, महिलाओं, युवाओं, बेरोजगारों, पशुपालकों, जरूरतमंद वर्गों तथा मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी हुई घोषणाओं को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है।

जाखम एवं गागरी सिंचाई परियोजना

प्रतापगढ़ जिले के धरियावद विधानसभा क्षेत्र की जाखम वृहद सिंचाई परियोजना तथा गागरी लघु सिंचाई परियोजना में नहरी क्षेत्र की मरम्मत तथा जीर्णोद्धार से जुड़े तीन कार्यों के लिए 22 करोड़ 80 लाख रुपए मंजूर किए हैं। मुख्यमंत्री के इस निर्णय से बांधों एवं नहरी तंत्र से व्यर्थ बहकर जाने वाले जल रिसाव को रोकने में मदद मिलेगी। सिंचाई कार्यों के लिए इस जल का उपयोग हो सकेगा। साथ ही क्षतिग्रस्त नहरी तंत्री एवं एक्वाडक्टों का भी सुदृढ़ीकरण हो सकेगा।

आदिवासी के जीवन में खुशहाली

राज्य सरकार प्रदेश के आदिवासी समुदाय के कल्याण के लिए प्रतिबद्धता से काम कर ही है। राज्य सरकार का प्रयास है कि सरकार की योजनाओं से आदिवासी समुदाय में खुशहाली आए। विश्व आदिवासी दिवस पर मुख्यमंत्री ने 166.90 करोड़ रुपए के 43 कार्यों का लोकार्पण तथा 89.28 करोड़ रुपए के 185 कार्यों का शिलान्यास किया। उन्होंने बताया कि मावजी महाराज, गोविंद गुरु, मानगढ़ के शहीदों, वीर बालिका कालीबाई, नानाभाई खांट, भीखाभाई भील आदि जनजाति महापुरुषों के योगदान, उनकी गाथाओं, धरोहरों एवं स्मारकों के संरक्षण में सरकार कोई कमी नहीं आने देगी तथा इस दिशा में पेनोरमा बनाने में काम को हाथ में लिया जाएगा। जनजाति क्षेत्र के समग्र विकास के लिए इस वर्ष कुल राज्य योजना का 13.68 प्रतिशत प्रावधान जनजाति उपयोजना मद में रखा गया है। बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जिले में स्वीकृत एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय प्रारंभ कर दिए गए हैं। हरिदेव जोशी कैनाल भीखाभाई नहर प्रणाली के विकास रखरखाव पर 25 करोड़ रुपए दिए गए है। जरूरतमंद विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और प्रोफेशनल कोर्सेज में प्रवेश के लिए अनुप्रति योजना लागू की गई है। मेधावी छात्राओं के लिए कालीबाई भील स्कूटी योजना लागू की गई है।

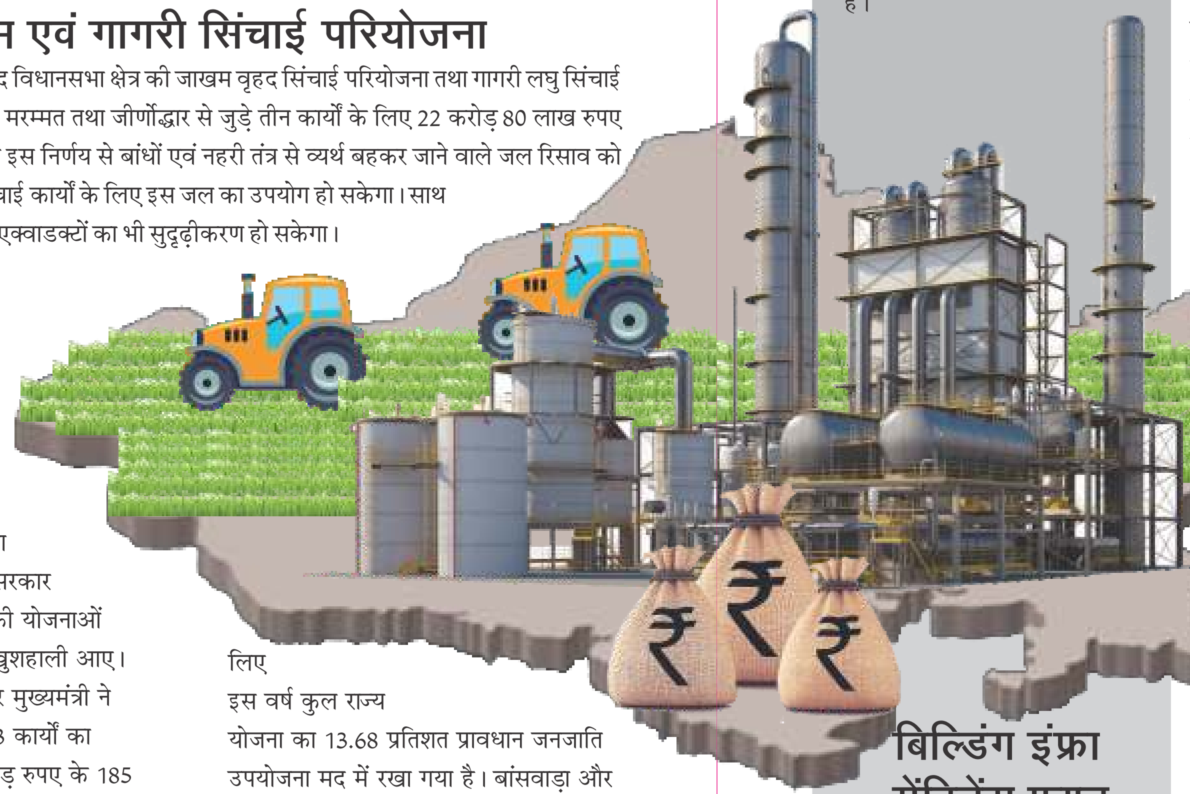

खेलों को बढ़ावा

राज्य में खेलों को बढ़ावा देने एवं खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से सरकार ने खेल कोटे से चयनित एथलीट शेरसिंह को उप निरीक्षक पुलिस (एसआई) के पद पर वर्ष 2021-22 की रिक्तियों के विरुद्ध आउट ऑफ टर्न नियुक्ति दी है। इसके साथ ही खेलों में प्रदेश का नाम रोशन करने वाले पदक विजेता खिलाड़ियों को राज्य सरकार में सीधी नौकरी देने के प्रावधान तय किए गए हैं।

बरकतुल्लाह स्टेडियम का जीर्णोद्धार

राजस्थान की लम्बित मांग के अनुरूप आगामी दिनों में जोधपुर में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच और आईपीएल टूर्नामेंट आयोजित किए जाएंगे। इसके लिए जल्द ही जोधपुर के बरकतुल्लाह खां क्रिकेट स्टेडियम का जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने इसके लिए 10 करोड़ रुपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान के प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया है। राज्य बजट वर्ष 2021-22 में जोधपुर विकास प्राधिकरण द्वारा 20 करोड़ रुपए की लागत से बरकतुल्लाह खां क्रिकेट स्टेडियम के जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण संबंधी कार्य करवाने की घोषणा की गई थी।

सिलिकोसिस रोगियों को खाद्य सुरक्षा

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा की सूची में शामिल होने से अब तक वंचित रहे सिलिकोसिस रोगियों एवं उनके परिवारों के नाम राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना (एनएफएसए) के लाभार्थियों की सूची में सम्मिलित करने की राज्य सरकार ने मंजूरी दी है। इस मानवीय निर्णय से 19 हजार 541 चिह्नित प्रकरणों में सिलिकोसिस रोगियों एवं उनके परिवारों को खाद्य सुरक्षा का लाभ मिल सकेगा।

बकाया ऋणों के लिए एमनेस्टी योजना

राज्य सरकार ने राजस्थान अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास सहकारी निगम को आर्थिक रूप से सक्षम बनाने का निर्णय लिया है। इसके लिए वर्ष 2013-14 पूर्व के ऋणों के लिए एक एमनेस्टी योजना लाई जाएगी। मुख्यमंत्री ने इसके लिए अल्पसंख्यक ऋण आम माफी योजना 2021 के प्रारूप का अनुमोदन कर दिया है। योजना तीन चरणों में लागू होगी, जिसका प्रथम चरण 30 नवम्बर 2021, दूसरा चरण 31 जनवरी, 2022 तथा तीसरा चरण 31 मार्च, 2022 तक प्रभावी रहेगा। प्रस्ताव के अनुसार बकाया मूल राशि की 20 प्रतिशत वूसली प्रथम चरण में, 30 प्रतिशत वसूली दूसरे चरण में तथा अंतिम चरण में 40 प्रतिशत वसूली की जाएगी। इस निर्णय से बड़ी संख्या में राजस्थान अल्पसंख्यक वित्त एवं सहकारी निगम के ऋण प्राप्तकर्ताओं को लाभ होगा।

बिल्डिंग इंफ्रा मेंटिनेंस फण्ड

राज्य सरकार ने प्रदेश में पुराने सरकारी जन उपयोगी भवनों की मरम्मत के लिए बिल्डिंग इंफ्रा मेंटिनेंस फण्ड बनाने का निर्णय लिया है। इस फण्ड के माध्यम से आगामी दो वर्षों में करीब 500 करोड़ रुपए के कार्यों से जन उपयोगी भवनों में आवश्यकता के अनुरूप मरम्मत कार्य कराए जाएंगे।

चिरंजीवी योजना में निजी अस्पताल

मुख्यमंत्री ने अपने पिछले कार्यकाल में मुफ्त दवा योजना को लेकर देश ही नहीं दुनिया में राज्य की पहचान बनाई थी। अब इसके बाद आम लोगों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू की। जिसमें आम लोगों का 5 लाख तक का मुफ्त चिकित्सा बीमा कराया जा रहा है। इसमें सभी सरकारी कर्मचारियों सहित विभिन्न श्रेणी के लोगों को शामिल किया जा रहा है। इस योजना से प्रदेश के सभी निजी अस्पतालों को जोड़ा जा रहा है।

ट्रांसजेंडर उत्थान कोष

राज्य सरकार ने ट्रांसजेंडर समुदाय के अधिकारों के संरक्षण के प्रति संवेदनशील निर्णय लेते हुए इस समुदाय के समावेशी विकास के लिए एक कार्ययोजना तैयार की है। मुख्यमंत्री ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा प्रस्तावित इस कार्ययोजना के प्रारूप का अनुमोदन कर कार्ययोजना के क्रियान्वयन के लिए लगभग 8.98 करोड़ रुपए के अतिरिक्त बजट प्रावधान को भी स्वीकृति दी है।

मोनोग्राफ का लोकार्पण

मुख्यमंत्री ने गत दिनों राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा निर्मित स्वाधीनता संग्राम के पुरोधाओं के मोनोग्राफ के डिजिटल संस्करण का लोकार्पण एवं ई-लाइब्रेरी वेब एप्लीकेशन का शुभारंभ किया। इन मोनोग्राफ के डिजिटलाइजेशन से छात्रों खासकर शोधार्थियों को हमारे स्वाधीनता सैनानियों के बारे में जानने में आसानी होगी। जिन स्वाधीनता सैनानियों के मोनोग्राफ नहीं बने हैं, उनके मोनोग्राफ भी प्रकाशित किए जाएंगे, जो स्वतंत्रता सैनानी अभी जीवित हैं, उनके अनुभवों का वीडियो बनाकर स्वाधीनता संग्राम की उनकी यादों को युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

विधायक आवास

राजस्थान आवासन मण्डल की विधायक आवास परियोजना, कांस्टीट्यूशन क्लब प्रोजेक्ट एवं एआईएस परियोजना सहित मण्डल के अन्य प्रोजेक्ट्स का गत दिनों शिलान्यास किया गया। नए विधायक आवासों में पर्याप्त जगह के साथ विभिन्न सुविधाएं होंगी। विधायकों से मिलने आने वाले उनके क्षेत्र के लोगों को भी अब परेशानी नहीं होगी। राजस्थान आवासन मण्डल एक समय बंद होने के कगार पर था, लेकिन वर्तमान राज्य सरकार की इच्छाशक्ति और मण्डल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समर्पण भाव से काम करने का ही परिणाम है कि पिछले कुछ समय में मण्डल को नया जीवन मिला है।

घर–घर औषधि

राजस्थान पहला प्रदेश है, जिसने औषधीय पौधों के प्रति जन चेतना जागृत करने के लिए वृहद स्तर पर ऐसी अनूठी योजना लागू की है। यह हमारी भावी पीढ़ी की प्रतिरोधक क्षमतना बढ़ाने की दिशा में बड़ा कदम होगा। मुख्यमंत्री निवास पर मुख्यमंत्री ने गिलोय का औषधीय पौधा लगाकर योजना की शुरूआत की। मुख्यमंत्री ने घर-घर औषधि योजना के व्यापक प्रसार-प्रचार के लिए पोस्टर, ब्रोशर एवं बुकलेट का विमोचन भी किया। राज्य सरकार ने नि:शुल्क वितरण के लिए तुलसी, गिलोय, कालमेघ और अश्वगंधा जैसे औषधीय पौधों का चयन किया है, जो प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सर्वाधिक कारगर है।

कृषि आदान–अनुदान

रबी फसल वर्ष 2020-21 (संवत् 2077) में ओलावृष्टि से 33 प्रतिशत या इससे अधिक फसल खराबा होने की गिरदावरी रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार ने प्रदेश के 11 जिलों के 85 गांवों को अभावग्रस्त घोषित किया है। मुख्यमंत्री खराबे से प्रभावित इन 85 गांवों को अधिसूचित कर प्रभावित किसानों को कृषि आदान-अनुदान देने के लिए जारी की जानी वाली अधिसूचना के प्रारूप का अनुमोदन कर दिया है। जिला कलक्टरों से प्राप्त नियमित एवं विशेष गिरदावरी रिपोर्ट के आधार पर झुंझुनू जिले के 28, हनुमानगढ़ के 19, भरतपुर के 9, कोटा के 8, सवाईमाधोपुर के 6, टोंक एवं बीकानेर के 4-4, चूरू, चित्तौड़गढ़ एवं बाड़मेर के 2-2 तथा अलवर जिले के एक गांव को अभावग्रस्त घोषित किया गया है।

इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड

राज्य सरकार ने शहरी क्षेत्र के स्ट्रीट वेण्डर्स तथा सर्विस सेक्टर के युवाओं एवं बेरोजगारों को स्वरोजगार तथा रोजमर्रा की जरूरतों के लिए इंदिरा गांधी शहरी क्रेडिट कार्ड योजना 2021 के प्रारूप का अनुमोदन कर दिया है। योजना का लक्ष्य स्ट्रीट वेंडर्स, हेयर ड्रेसर, रिक्शा वाला, खाती, कुम्हार, मोची, मिस्त्री, दर्जी, धोबी, रंगाई-पुताई वाले, इलेक्ट्रिशियन, प्लम्बर सहित असंगठित क्षेत्र के अन्य लोगों एवं बेरोजगार युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए आर्थिक रूप से संबल प्रदान करना है। इसके तहत लाभार्थी को बिना किसी गारंटी के 50 हजार रुपए तक का ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जाएगा।

नए औद्योगिक क्षेत्र

प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए बजट घोषणा के अनुरूप 147 उपखण्डों में औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने के काम को तेजी से पूरा किया जा रहा है। राजस्थान के सभी उपखण्डों में औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने के लक्ष्य को हासिल करने के प्रयास किए जा रहा है। एनसीआर और दिल्ली के नजदीक होने के कारण निवेश की दृष्टि से भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण है। इसके विकास के लिए 100 करोड़ रुपए का बजट उपलब्ध कराने की घोषणा की गई है। बजट में की गई घोषणा की पालना में 147 उपखण्डों में रीको के औद्योगिक क्षेत्र स्थापित करने के काम को निर्धारित समय से पहले पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है। अब तक 91 उपखण्डों में भूमि चिह्नित कर ली गई है, जिनमें से 25 उपखण्डों में भूमि आवंटित कर दी गई है और 26 क्षेत्रों के लिए जमीन आरक्षित कर दी गई है।

Royal Fabricators

...a house of metal craft

Ramakant Ajaria: 9414162895
Tushar Ajaria: 9828148574
Raghvendra Ajaria: 9602226582
Rajveer Ajaria: 9799119320

Deal in :

- Redisential and comercial Metal work.
- CNC machine Job Work.
- Authorised Dealer of TATA PRAVESH Door.
- Aluminum and Stainless steel railings.

36 ,kala ji Gora ji Lake Palace Road Udaipur :Office
7,Ekilingpura chouraha Udaipur : Factory
TATA PRAVESH Door Sec.4 Opp Swagat Vatika : Gallery

www.royalimaginations.com | tusharajaria@gmail.com

तालिबानी अंदाज में महबूबा

'सुधर जाओ, हमारे सब्र का इम्तहान मत लो, मिट जाओगे।'
महबूबा मुफ्ती का यह बयान निश्चित ही कश्मीर की तेजी से सुधरती स्थिति को फिर से बिगाड़ने का संकेत देने वाला है। लगता है कि महबूबा को पहले के बयानों के कारण जिस प्रकार की आलोचना झेलनी पड़ी, उससे उन्होंने कोई सबक नहीं लिया है।

सुरेश हिन्दुस्थानी

अफगानिस्तान में भय दिखाकर तालिबान द्वारा सत्ता पर किए गए कब्जे के बाद भारत में समर्थन करने जैसे स्वर भी सुनाई देने लगे हैं। हालांकि कुछ लोगों ने ऐसे स्वर निकालने के बाद या तो उस पर सफाई दे दी है या फिर वे शांत हो गए हैं। इसके पीछे एक मात्र कारण यह भी हो सकता है कि अब भारत देश का जो वातावरण दिख रहा है, वह पहले जैसा नहीं है। पहले के समय में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम कई लोग ऐसे बयान देने वालों के समर्थन में भी खड़े होते दिखाई दिए। तालिबान के आतंक के विरोध में बढ़ रहे स्वरों को देखकर यह तो समझा जा सकता है कि जिस प्रकार से आतंकी सरगना लादेन के समर्थन में खुलकर स्वर सुनाई दे रहे थे, जिस प्रकार याकूब मेनन के जनाजे में हजारों की भीड़ शामिल हुई, इससे बहुत लोगों की आंखें भी खुली हैं, लेकिन अब जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने तालिबान के बहाने केन्द्र सरकार को चेतावनी भरे अंदाज में कहा है कि 'सुधर जाओ, हमारे सब्र का इम्तिहान मत लो, मिट जाओगे।' महबूबा मुफ्ती का यह बयान निश्चित ही कश्मीर की स्थिति को फिर से बिगाड़ने का संकेत दे रहा है। ऐसा लगता है कि महबूबा मुफ्ती को पहले के बयानों के चलते जिस प्रकार की आलोचना झेलनी पड़ी, उससे उन्होंने कोई सबक नहीं लिया। महबूबा का बयान निःसंदेह तालिबानी अंदाज वाला ही है। उन्हें समझना चाहिए कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है और लोकतांत्रिक पद्धति से चुनी गई सरकार जनता की आकांक्षाओं के अनुसार ही बनती है। महबूबा मुफ्ती का बयान एक प्रकार से जनता का अपमान भी है। इतना ही नहीं महबूबा ने यह बयान देकर सीधे तौर पर आतंक के समर्थन वाली भाषा ही बोली है। ऐसा नहीं है कि आतंक को प्रश्रय देने वाला यह बयान पहली बारआया है, इससे पहले भी वे कई अवसरों पर पाकिस्तान परस्ती बयान दे चुकी हैं।

उचित तो यही होता कि महबूबा

मदनी का प्रतिगामी स्वर

काबुल में तालिबान के काबिज होने के साथ अफगानी बच्चियों और औरतों के भविष्य को लेकर जब पूरी दुनिया चिंता में डूबी हुई है, तब भारत में जमीयत उलेमा–ए–हिंद के सदर अरशद मदनी का यह बयान की लड़कियों और लड़कों की शिक्षा अलग–अलग होनी चाहिए, एक प्रतिगामी विचार तो है ही, भारतीय संविधान की मूल भावना के भी खिलाफ है। कोई भी तरक्की पसंद हिन्दुस्तानी उनकी इस राय को सिरे से खारिज ही करेगा। भारत संविधान से संचालित एक गणतंत्रीय राष्ट्र है, जहां बेटियों को बेटों के बराबर सांविधानिक अधिकार हैं। एक नागरिक के तौर पर अपने बेहतर भविष्य के लिए वे हर वह फैसला कर सकती हैं, जो इस देश के लड़कों को हासिल है। कई इस्लामी मुल्कों में भी सहशिक्षा की व्यवस्था है और वह बाकायदा चल रही है। आने वाले दौर की जरूरतों और तेजी से बदलती दुनिया के मद्देनजर अरब देशों को औरतों पर लगी पाबंदियां आहिस्ता–आहिस्ता उठानी पड़ रही हैं। कतर जैसे देश में तो लड़कियों को खेल–कूद तक में बराबर का हक मिलने लगा है। वहां लड़के–लड़कियों की साक्षरता दर में मामूली सा फर्क रह गया है। ऐसे में मदनी के संकीर्ण विचारों को अब मुस्लिम समाज से भी बहुत समर्थन नहीं मिल सकता। तीन तलाक के मसले पर देश ने देखा है कि किस कदर महिलाओं ने नए कानून का स्वागत किया। इन बदलावों को देखते हुए भी मजहबी इदारों में बैठे लोगों को अतार्किक बातों से परहेज करना चाहिए। उनसे उम्मीद की जाती है कि तंग दायरों से निकल वे समाज का मार्गदर्शन करें। **– उदय प्रजापत**

अफगानिस्तान में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के विरोध में आवाज उठाती, लेकिन एक महिला के होने के बाद भी उन्होंने इसके बारे में कुछ भी नहीं बोला। अफगानिस्तान में तालिबान भले ही महिलाओं को लेकर अच्छी राय प्रदर्शित करने वाले बयान दे रहा हो, लेकिन जिस प्रकार के दृश्य सामने आ रहे हैं, उससे यही लगता है कि वे महिलाओं को ज्यादा अधिकार देने की मानसिकता में नहीं हैं। महबूबा मुफ्ती मुस्लिम होने के साथ एक राजनेता भी हैं, लेकिन उनका बयान ऐसा कतई नहीं माना जा सकता कि उन्हें राजनेता की श्रेणी में माना जाए। वे विशुद्ध रूप से तालिबानी मानसिकता के वशीभूत होकर ही बयान दे रही हैं। ऐसे ही बयानों के चलते पाकिस्तान को भारत पर आघात करने का अवसर मिल जाता है। भारत में पाकिस्तान परस्त मानसिकता वाले लोगों के कारण ही आतंकी समूह सक्रिय हो जाते हैं। जम्मू कश्मीर में इसके प्रमाण भी मिल चुके हैं। जहां तक अफगानिस्तान में तालिबानी आतंक की बात है तो इससे भारत के शत्रु देश चीन और पाकिस्तान अंदरूनी तौर पर उत्साहित दिखाई दे रहे हैं। क्योंकि तालिबान को पाकिस्तान में फलफूल रहे आतंकी सरगनाओं से पूरा समर्थन भी मिल रहा है जो आतंकवादी भारत के सिरमौर कश्मीर में लोगों को बरगलाने का कार्य करते हैं, देर सवेर इन्हीं आतंकियों को तालिबान का सहारा मिलेगा और यह स्थिति कश्मीर में फिर से वैसी ही स्थिति पैदा करने का मार्ग तैयार करने वाली है, जो जम्मू कश्मीर में पहले बनी थी। आज जम्मू कश्मीर पूरी तरह से बदला हुआ है। वहां जनमानस सुख-शांति की राह पर कदम बढ़ाने के लिए तैयार हो रहा है, ऐसे में महबूबा मुफ्ती का बयान किस प्रकार की मानसिकता का प्रदर्शन कर रहा है। बड़ा सवाल यह है कि महबूबा मुफ्ती भारत देश की नेता है या फिर तालिबान की ? यह बात सही है कि तालिबान मुस्लिम मान्यताओं के हिसाब से शासन करने की वकालात करता है, जिसमें लोकतंत्र जैसी कोई गुंजाइश भी नही हैं। महबूबा मुफ्ती का धमकी भरा बयान भारत में तालिबानी संस्कृति पैदा करने की ओर इशारा करता है।

जहां तक अपने पंथ और संप्रदाय की बात है तो इसे सभी को मानने का अधिकार हमारा संविधान प्रदान करता है, लेकिन जिन बयानों से देश का वातावरण बिगड़ने का संकेत मिलता है। निश्चित ही राष्ट्रद्रोह की श्रेणी में ही आते हैं। महबूबा मुफ्ती को साम्प्रदायिकता से ऊपर उठकर देश के बारे में सोचना चाहिए, लेकिन उन्होंने अपने ही देश की सरकार को चेतावनी दे दी। तालिबान ने अफगानिस्तान में जो कृत्य किया है, उसे अफगानियों की दृष्टि से देखा जाए तो यही लगता है कि तालिबान ने लोगों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात किया है। तालिबान के शासन के बाद अफगानिस्तान के नागरिकों को अपने मनमुताबिक जीवन जीने का कोई भी अधिकार नहीं मिलेगा। इसे व्यक्तियों के स्वत्व पर हमला निरूपित किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। सवाल यह भी है कि जो लोग भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर कुछ भी बोलने को जायज ठहराते हैं, उन्हें भी तालिबान का रवैया पसंद आ रहा है। जिन लोगों को भारत देश में रहने से डर लगता था, वह भी तालिबान की घटना पर मौन धारण करके बैठ गए हैं। सबसे बड़ी बात यह भी है कि किसी मुस्लिम के साथ कोई गैर मुस्लिम ऐसा कार्य करता तो पूरे विश्व के मुसलमान आवाज उठाने लगते है। लेकिन तालिबान यही कार्य कर रहा है, तब सबकी बोलती बंद है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

Laxmi Narayan Bhadada
Mob:- 9414202497

HP

BHADADA FILLING STATION

H.P.C.L. DEALER

Outside Savina Kheda,
Banswara Road,
Udaipur (Raj.) 313001
Phone :- (0294) 6450174, 2583802

रूपाणी पर भारी कोरोना और सामाजिक समीकरण भी

गुजरात में भी बदला भाजपा का चेहरा

चुनाव से 15 माह पूर्व सरकार विरोधी माहौल शांत करने की कोशिश, रूपाणी मंत्रिमंडल के सभी सदस्यों की छुट्टी, अब नजर हरियाणा, मप्र और त्रिपुरा पर

रमेश जोशी

गुजरात में विजय रूपाणी के मुख्यमंत्री पद से अचानक इस्तीफे ने तो चौंकाया ही लेकिन उससे ज्यादा चौंकने की बारी तब आई जब तमाम दावेदारों को धकियाते हुए भारतीय जनता पार्टी ने एक ऐसे व्यक्ति को रूपाणी का उत्तराधिकार सौंप दिया, जिनका नाम न तो दावेदारों की होड़ में था और न ही वे मंत्रिमंडल के सदस्य थे। भाजपा विधायक दल की 12 सितम्बर की बैठक में विधानसभा में पहली बार चुनकर आए भूपेन्द्र पटेल को सर्वसम्मति से विधायक दल का नेता चुना गया। उनके नाम का प्रस्ताव निवर्तमान मुख्यमंत्री रूपाणी ने पेश किया। पटेल ने अगले दिन 13 सितम्बर को पद और गोपनीयता की शपथ राज्यपाल आचार्य देवव्रत से ग्रहण की। विधायक दल की बैठक में भाजपा आलाकमान की ओर से मनोनीत पर्यवेक्षक केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्रसिंह तोमर तथा प्रहलाद जोशी, प्रदेश भाजपा प्रभारी भूपेन्द्र यादव, प्रदेश भाजपाध्यक्ष सी.आर. पाटिल भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री की दौड़ में शामिल छह बार के विधायक उपमुख्यमंत्री नितिन पटेल, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया, केन्द्रीय पशुपालन मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला, प्रदेश अध्यक्ष सी.आर. पाटिल, प्रफुल्ल खोड़ा, आसी फालदू, कद्दावर नेता गोरधन झड़फिया में से किसी एक को सत्ता की कमान सौंपे जाने की चर्चा गर्म थीं, लेकिन एक सामान्य विधायक के सिर ताज रखकर मोदी-शाह की जुगलबंदी ने सबको चौंका दिया। नए मुख्यमंत्री के लिए 15 माह का शेष कार्यकाल आसान नहीं होगा। वरिष्ठ नेताओं में उनके चयन को लेकर नाराजगी है। उनकी राह में अप्रत्यक्ष ही सही मुश्किलें जरूर खड़ी की जाएंगी। नाराजगी का एक बड़ा सबब 16 सितम्बर को नए मंत्रिमंडल की शपथ को लेकर भी है। जिसमें रूपाणी मंत्रिमंडल के सभी 22 मंत्रियों की छुट्टी कर 24 नए मंत्रियों को शपथ दिलाई गई। भाजपा आलाकमान ने यहां एक बार चौंकाने वाला निर्णय किया है।

भाजपा ने 2017 का चुनाव साधारण बहुमत से जीता था। 2017 में उसे 99 सीटें मिलीं। जबकि 2012 के चुनावों में उसे 115 सीटें मिली थीं। 2014 के लोकसभा चुनाव में पाटीदारों का वोट शेयर भी कम हुआ है। जहां 2014 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को पाटीदारों का 60 फीसदी वोट मिला था। वहीं 2017 में यह घटकर 49.1 फीसदी रह गया।

आमतौर पर पार्टियां चुनावों में अपने, पार्टी

2014 के बाद कोई भी मुख्यमंत्री गुजरात में अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाया

सियासत
पांच माह में चार सीएम बदले

भाजपा ने पिछले पांच माह के भीतर ही चार मुख्यमंत्री बदल डाले। कर्नाटक में बीएस येदियुरप्पा, उत्तराखंड में तीरथसिंह राव और त्रिवेंद्रसिंह रावत के बाद विजय रूपाणी ने इस्तीफा सौंपा।

समीकरण
युवा और नए चेहरों को मौका

भाजपा नेतृत्व युवा व नए चेहरों को आगे लाने की कोशिश के तहत लगातार बदलाव कर रहा। सूत्रों के मुताबिक, जमीनी स्तर पर प्रतिक्रिया मिलने के बाद कई राज्यों में भाजपा ने नेतृत्व परिवर्तन किया।

नए मुख्यमंत्री के सामने चुनौती

1. **विधानसभा चुनाव:** 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने गुजरात में सरकार जरूर बनाई थी, पर कांग्रेस का प्रदर्शन भी अच्छा रहा था। ऐसे में उस प्रदर्शन को कैसे बेहतर किया जाए, ये काम नए सीएम को कम समय में करना होगा।
2. **कोरोना से लड़ाई :** कोरोना की दूसरे लहर में कई मौकों पर हाईकोर्ट द्वारा गुजरात सरकार को फटकार लगाई गई थी। इस वजह से रूपाणी के काम से लोग नाखुश थे। नए सीएम को फिर से स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को पटरी पर लाना होगा।
3. **पाटीदार समुदाय:** पाटीदार आंदोलन ने 2017 के चुनाव में भाजपा की जीत को काफी संघर्षपूर्ण बना दिया था, इसलिए जो भी कमान संभालेगा, इस समुदाय को ठीक तरीके से साधना जरूरी रहेगा।

और खासतौर पर नेतृत्व के कामकाज के आधार पर जनता से वोट मांगती हैं। लेकिन राज्य में भावी चुनावों में मिलने वाले समर्थन के मोर्चे पर भाजपा के अंदरूनी हलकों में शायद यह माना गया होगा कि नेतृत्व में बदलाव जरूरी है। यों पिछले कुछ सालों से भाजपा का मुख्य चुनावी नारा विकास ही रहा है, लेकिन गुजरात में इन दावों के बरक्स बदलते समीकरणों के मद्देनजर पार्टी को उसी मुताबिक अपना दांव चलना जरूरी लगा होगा। यह किसी से छिपा नहीं है कि पाटीदार आंदोलन के दौरान उभरे हार्दिक पटेल पिछले कुछ समय से राज्य की राजनीति में एक दमदार चेहरे के रूप में देखे जाने लगे हैं। साथ ही, चूंकि पिछले चुनाव में उनका असर साफ दिखा था, इसलिए संभव है कि वे भावी विधानसभा चुनावों में भाजपा के लिए चुनौती साबित हों। समाज के किसी एक शक्ति केन्द्र के उभरने के बाद जनसमर्थन के बाकी हिस्से पर भी उसका असर पड़ता है। शायद यही वजह है कि भाजपा को इसी राजनीतिक केन्द्र के लिहाज से भूपेन्द्र पटेल का चेहरा आगे करने की जरूरत महसूस हुई।

भूपेन्द्र पटेल को मृदुभाषी कार्यकर्ता के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने नगर पालिका स्तर के नेता से लेकर प्रदेश की राजनीति में शीर्ष पद तक का सफर तय किया है। अपने समर्थकों के बीच दादा के नाम पुकारे जाने वाले पटेल 2015 से 2017 तक अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण (एयूडीए) के अध्यक्ष रह चुके हैं। इससे पहले वे 2010 से 2015 तक गुजरात के सबसे बड़ी शहरी निकाय अहमदाबाद नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे थे। वे पाटीदार समुदाय के संगठन सरदारधाम विश्व पाटीदार केन्द्र के न्यासी भी हैं।

उत्तराखंड में दो बार नेतृत्व परिवर्तन के बाद कर्नाटक और अब गुजरात में बदलाव की पटकथा पिछले साल हरियाणा, झारखंड और अन्य कई राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद ही लिख ली गई थी। लोकसभा का वोट प्रतिशत विधानसभा चुनाव में बरकरार न रहने से चिंतित भाजपा नेतृत्व ने अलग-अलग राज्यों की समीक्षा कर जरूरत पड़ने पर नेतृत्व परिवर्तन की रणनीति बनाई थी।

इसी के तहत उत्तराखंड, कर्नाटक के बाद अब गुजरात के मुख्यमंत्री विजय रूपाणी को इस्तीफा देना पड़ा। पार्टी के उच्च पदस्थ सूत्रों का कहना है कि यही फार्मूला चरणबद्ध तरीके से

कुछ और राज्यों में संभव है बदलाव

भाजपा नेतृत्व ने तीन माह में अपने तीन राज्यों के मुख्यमंत्री बदलकर भावी राजनीतिक तैयारियों के लिए बड़े बदलाव के संकेत दिए हैं। जल्दी ही कुछ और राज्यों में भी बदलाव हो सकता है। दरअसल, पार्टी नेतृत्व को जो फीडबैक मिल रहा है वह उतना अच्छा नहीं है, जिसकी वह उम्मीद कर रहा था। ऐसे में कमजोर विपक्ष के बावजूद भी पार्टी की रणनीतिक चिंता बरकरार है और वह उनको समय रहते हल कर लेना चाहती है। भाजपा नेतृत्व में तीन महीनों में उत्तराखंड, कर्नाटक और अब गुजरात के मुख्यमंत्री बदले हैं। उत्तराखंड में अगले साल की शुरुआत में चुनाव हैं और पार्टी रणनीति के अनुसार वहां पर पुराने नेतृत्व के साथ जरूरी चुनावी तैयारियां नहीं कर पा रही थी। ऐसे में वहां पर तो एक साल में तीन मुख्यमंत्री बदले गए हैं। कर्नाटक में भी पार्टी ने अपने बड़े नेता बीएस येद्दुरप्पा को बदल दिया है ताकि भविष्य की मजबूत जमीन तैयार की जा सके।

भाजपा की अंदरूनी लड़ाई सामने आई : कांग्रेस

कांग्रेस ने गुजरात के मुख्यमंत्री पद से विजय रूपाणी के इस्तीफे के बाद कहा कि इस घटनाक्रम से विभिन्न राज्यों में भाजपा की अंदरूनी लड़ाई सामने आई है। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने यह भी कहा कि अब गुजरात को भाजपा से मुक्ति दिलाने का समय आ गया है। उन्होंने भाजपा का पूरा नाम भयंकर झगड़ा पार्टी बताते हुए कहा कि आज के राजनीतिक घटनाक्रम में दो चीजें सामने आई हैं। पहली यह कि सभी भाजपा शासित राज्यों में अंदरूनी लड़ाई है। चाहे वह गुजरात हो, उत्तरप्रदेश हो, मध्यप्रदेश हो, असम हो या हरियाणा हो। दूसरी यह कि मीडिया का एक वर्ग भाजपा में चल रही आपसी लड़ाई से बेखबर बना हुआ है।

हरियाणा, त्रिपुरा और मध्यप्रदेश में भी आजमाया जाएगा। यही नहीं जिन राज्यों में भाजपा की सरकार नहीं है, वहां संगठन में बदलाव किया जाएगा। पार्टी नेतृत्व को इन राज्यों में जातिगत समीकरण में फिट बैठने और जनाधार वाले नेताओं की तलाश है।

गुजरात में कोरोनाकाल के दौरान माहौल में आए बदलाव और सामाजिक समीकरण मुख्यमंत्री विजय रूपाणी पर भारी पड़े हैं। भाजपा नेतृत्व में विधानसभा चुनाव के सवा साल पहले राज्य में नेतृत्व परिवर्तन कर साफ कर दिया है कि वह कोई भी राजनीतिक जोखिम नहीं लेना चाहता है और समय रहते जरूरी बदलाव करने में उसे कोई हिचक नहीं है।

गुजरात का नेतृत्व परिवर्तन इसलिए भी अहम है क्योंकि यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह का गृह राज्य है। गुजरात की राजनीति इन दोनों नेताओं के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है। विजय रूपाणी को जब मुख्यमंत्री बनाया गया था तब भी सामाजिक समीकरण उनके पक्ष में नहीं थे, लेकिन तब भाजपा के सामने ऐसा कोई बड़ा संकट नहीं था, जिससे कि राज्य में सामाजिक समीकरण ज्यादा प्रभावित होते हों। कोरोना काल में खासकर दूसरी लहर में गुजरात सरकार प्रभावी नियंत्रण करते नहीं दिखी, जिसका खामियाजा विजय रूपाणी को भुगतना पड़ा है।

कोरोना और कास्ट (जाति) दो प्रमुख कारण रहे, जिनके चलते गुजरात में नेतृत्व परिवर्तन किया गया है। बीते दो महीने से भाजपा नेतृत्व हर राज्य की व्यापक समीक्षा कर रहा है, इनमें सबसे जयादा ध्यान उन राज्यों को दिया जा रहा है जहां उसकी सरकारें हैं और निकट भविष्य में चुनाव होने वाले हैं। गुजरात में दिसम्बर 2022 में चुनाव होने हैं ऐसे में नेतृत्व परिवर्तन करने के बाद नए मुख्यमंत्री को भी पर्याप्त समय मिल सकेगा।

कांग्रेस भी चली भाजपा की राह, पंजाब में बदला अपना चेहरा, चन्नी बने मुख्यमंत्री

सृष्टि संचालन में नवरूप शक्ति

कैलाश 'मानव'
पद्मश्री

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, जल, अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी, पेड़-पौधे, पर्वत, सागर, पशु-पक्षी, देव, दनुज, मनुज, नाग, किन्नर, गंधर्व, सदैव प्राण शक्ति व रक्षा शक्ति की इच्छा से चलायमान हैं। मानव सभ्यता का उदय भी शक्ति की इच्छा से हुआ। उसे कहीं न कहीं प्राण व रक्षा शक्ति के अस्तित्व का अहसास होता रहा है। जब महिषासुर आदि दैत्यों के अत्याचार से भू एवं देवलोक व्याकुल हो उठे तो परमपिता परमेश्वर ने आदि शक्ति मां जगदम्बा को विश्व कल्याण के लिए प्रेरित किया। जिन्होंने महिषासुर आदि दैत्यों का वध कर भू एवं देवलोक में पुन: प्राण शक्ति व रक्षा शक्ति का संचार कर दिया। बिना शक्ति की इच्छा के एक कण भी नहीं हिल सकता। त्रैलोक्य दृष्टा शिव भी 'इ' की मात्रा अर्थात शक्ति के हटते ही शव (मुर्दा) बन जाते हैं। अर्थात देवी भागवत, सूर्य पुराण, शिव पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय आदि पुराणों में शिव शक्ति की कल्याणकारी कथाओं का अद्वितीय वर्णन है। शक्ति की परम कृपा प्राप्त करने हेतु संपूर्ण भारत में नवरात्रि का पर्व वर्ष में दो बार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा अश्विन शुक्ल प्रतिपदा को बहुत ही श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। जिसे ग्रीष्मकालीन नवरात्रि शारदीय नवरात्रि के नाम से जाना जाता है। इस समय शारदीय नवरात्र में खरीफ व ग्रीष्म में रबी की नई फसल तैयार हो जाती है। इन फसलों के रखरखाव व कीट-पतंगों से रक्षा के लिए घर, परिवार व जीवन को सुखी समृद्ध बनाने तथा भयंकर कष्टों, दुख-दरिद्रता से छुटकारा पाने हेतु सभी वर्ण के लोग नौ दिनों तक विशेष सफाई तथा पवित्रता को महत्व देते हुए नौ दैवियों की आराधना में हवन आदि यज्ञ क्रियाएं करते हैं। यज्ञ क्रियाओं द्वारा पुन: वर्षा होती है, जो जगत को धन-धान्य से परिपूर्ण करती है तथा अनेक प्रकार की संक्रमित बीमारियों का अंत भी। भगवान श्रीराम ने भी आदि शक्ति जगदम्बा की आराधना नवरात्रि के विशेष पर्व में कर उनकी असीम कृपा से ही अत्याचारी रावण का वध किया था।

मां दुर्गा की पूजा व साधना नवरात्रि में अनेक विद्वानों एवं साधकों ने बताई है। किंतु सबसे प्रामणिक व श्रेष्ठ आधार दुर्गा सप्तशती है, जिसमें सात सौ श्लोकों द्वारा भगवती दुर्गा की अर्चना व वंदना की गई है। नवरात्रि में श्रद्धा एवं विश्वास के साथ दुर्गा सप्तशती के श्लोकों द्वारा मां दुर्गा देवी की पूजा नियमित शुद्धता व पवित्रता से की जाए तो निश्चित रूप से मां प्रसन्न हो इष्ट फल प्रदान करती हैं। समयाभाव-व्यस्तता को ध्यान में रख दुर्गा-सप्तशती के कुछ सूक्ष्म पाठों को कम समय में कर अभीष्ट फल को प्राप्त किया जा सकता है। दुर्गा सप्तशती में कम समय में इच्छित फल पाने हेतु सात सौ श्लोकों के स्थान पर सप्तश्लोकी दुर्गा पाठ का विधान है। जिसे अत्यंत कम समय में करके भी मनवांछित फल प्राप्त किया जा सकता है।

इसी तरह दुर्गा कवच, अर्गला, कफलक, रात्रि सूक्त, देवी सूक्त, अपराध-क्षमा-प्रार्थना स्रोत ऐसे हैं। जिन्हें किसी भी स्थान, देशकाल व परिस्थिति में करके भी मनवांछित फल अधिक शीघ्रता से प्राप्त किया जा सकता है। अत: नवरात्रि में भगवती जगदम्बा जो विश्व

की प्राण, आत्मा व रक्षा शक्ति है, उनकी स्थापना एवं पूजा विधि-विधान के साथ प्रत्येक व्यक्ति को करनी चाहिए। इस पूजा में पवित्रता, नियम व संयम तथा ब्रह्मचर्य का विशिष्ट महत्व है। इसलिए स्थापना राहुकाल, यमघट काल में कदापि नहीं करना चाहिए। इस पूजा के समय घर व देवालय को तोरण व विविध प्रकार के मांगलिक पत्र, पुष्पों से सजा-सुंदर सर्वतो भद्र, मण्डल स्वास्तिक, नवग्रह, ओमकार आदि की स्थापना विधिवत शास्त्रोक्त विधि से कर समस्त देवी-देवताओं का आह्वान करना चाहिए। उनके नाम मंत्रोच्चारण द्वारा कर षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए जो विशेष फलदायिनी है। पूजा के समय ज्योति जो साक्षात्कार शक्ति का प्रतिरूप है, उसे अखंड ज्योति के रूप में शुद्ध घी या घी से प्रज्जवलित करना चाहिए। इस अखण्ड ज्योति को सर्वतोभद्र मण्डल के अग्निकोण में स्थापित करना चाहिए। ज्योति द्वारा ही प्रत्येक जीवन को प्राण शक्ति प्राप्त होती है, इस ज्योति से ही आर्थिक समृद्धि के द्वार खुलते हैं। अंधकार, दुख, भय में खोए हुए व्यक्ति को ज्योति शक्ति के रूप में सदैव

सहायता करती है। ज्योति शब्द का अर्थ प्रकाश या रोशनी से है, जिसके बिना जीवन का संचालन असंभव ही नहीं नामुमकिन भी है। इसलिए नवरात्रि में अखंड ज्योति का विशेष महत्व है, जो जीवन के हर रास्ते को सुखद प्रकाशमय बना जाती है। इसलिए जहां तक संभव हो अखंड ज्योति का प्रज्जवलन विधिवत संकल्प के साथ प्रत्येक घर में होना चाहिए। जिसके प्रत्यक्ष प्रभाव से सारी विघ्न बाधाएं, कष्ट परेशानियां, बीमारियां इत्यादि समाप्त हो जाती है।

दुर्गा सप्तशती का पाठ घर या देवालय में नियम व श्रद्धा से किया जा सकता है। इस पूजा के पूर्व शौचादि क्रियाओं की विधिवत ढंग से कर स्नानादि द्वारा पवित्र हो, शुद्ध धुले हुए वस्त्रों को धारण कर शुद्ध आसन पर आसीन हो, मन में किसी प्रकार की कुण्ठा व ईर्ष्या, द्वेष, आशंका आदि न हो। सदाचार, सत्यवचन, दया, क्षमा व कायिक, वाचिक, मानसिक श्रद्धा से परिपूर्ण होकर पूजा की शुरुआत की जाए, तो निश्चित रूप से मां जगदम्बा मनोवांछित फल श्रद्धालुओं को प्रदान करती हैं।

नवरात्रि में व्रत का विधान भी है जिसमें पहले अंतिम और पूरे नौ दिनों तक का व्रत रखा जा सकता है। इस पर्व में सभी स्वस्थ व्यक्तियों को सामर्थ्य व श्रद्धा के अनुसार व्रत रखना चाहिए। किंतु जो बीमार व रोगी हो उन्हें व्रत रखना जरूरी नहीं है। किंतु मां भगवती का गुणगान कर या करवा, सुन या सुनाकर रोग व पीड़ाओं से मुक्त हो सकते हैं। व्रत में शुद्ध शाकाहारी व शुद्ध व्यंजनों का ही प्रयोग करना चाहिए। व्रती को प्याज, लहसुन आदि तामसिक व मांसाहारी पदार्थों का उपयोग नहीं करना चाहिए। व्रत में फलाहार अति उत्तम तथा श्रेष्ठ माना गया है। मां आदि शक्ति जगदम्बा अपनी इच्छा से नवग्रहों, नौ अंकों सहित समस्त ब्रह्माण्ड की दृश्य व अदृश्य वस्तुओं, विद्याओं व कलाओं को शक्ति दे संचालित कर रही हैं। भगवती के नवरूपों की शक्ति से ही संपूर्ण संसार संचालित हो रहा है। अतः मां दुर्गा देवी की कृपा हेतु नियमित रूप से नौ दिनों तक नवार्ण मंत्रों द्वारा वंदना करनी चाहिए। नवरात्रि में नव कन्याओं का पूजन कर उन्हें श्रद्धा विश्वास के साथ सामर्थ्यानुसार भोजन व दक्षिणा देना अत्यंत शुभ व श्रेष्ठ माना गया है। इस कलिकाल में सर्व बाधाओं, विघ्नों से मुक्त हो सुखद जीवन के पथ पर अग्रसर होने का सबसे सरल उपाय शक्ति रूपा जगदम्बा का नवरात्रि में विधि-विधान द्वारा पूजा-अर्चना ही एक साधन है। इससे मनुष्य को भयंकर कष्टों, रोगों, शोकों और दरिद्रता से उबार कर मां दुर्गा प्रसन्नता की नई ज्योति के साथ मनवांछित फल प्रदान करती हैं।

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

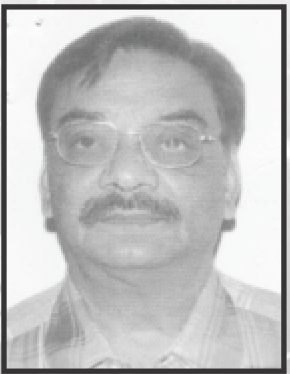

Nalwaya Mineral Industries Pvt. Ltd.

:: Head Office ::

7-A, Bapu Bazar, Udaipur-313 001 INDIA

Ph. : 91-294-2416301, 2422054, 2422947, Fax : 91-294-2524182

:: Residence ::

33, Pologround, Udaipur-313 001 (Raj.) Ph. : 91-294-2560628, 2521387

गणना से नफा हो, नुकसान नहीं

रोशन किशोर

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार के एक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल ने देश में जातिगत जनगणना की मांग को लेकर 23 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव (राजद) ने सुझाव दिया कि सामान्य दशकीय जनगणना में जातिगत जनगणना भी की जा सकती है, आखिर यह धार्मिक समूहों और अनुसूचित जातियों (एससी) एवं जनजातियों (एसटी) की अलग से गणना करती ही है। इस तरह के सुझाव निस्संदेह तार्किक जान पड़ते हैं, लेकिन इससे जातिगत जनगणना का मकसद पूरा नहीं हो सकता। आखिर क्यों? इसकी चार वजहें हैं।

पहली, तर्क यह दिया जा रहा है कि भारत ने 1931 के बाद से जातीय जनगणना नहीं की है। मगर हमें इनकी कमोबेश संख्या तो पता है। अंग्रेज हुकूमत 1881 से लेकर 1931 तक दशकीय जनगणना में जाति की गणना किया करती थी। मगर इसके बाद यह प्रथा बंद कर दी गई और आजाद भारत ने भी इसे फिर से शुरू नहीं किया। हालांकि, जनगणना में एससी-एसटी की आबादी की गिनती होती रही है। जनगणना में सिर्फ एससी-एसटी की गणना करने का मतलब यह नहीं है कि भारत की आबादी में मौजूद सामाजिक विभाजन से हम अनजान हैं। विभिन्न सरकारी सर्वेक्षणों में, जैसे राष्ट्रीय सैंपल सर्वे ऑफिस (एनएसएसओ) और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) में एससी-एसटी और अन्य पिछड़े वर्गों (ओबीसी) की व्यापक हिस्सेदारी

जातिगत जनगणना के आंकड़ें कुछ समूहों को मौजूदा लाभ से वंचित करते हैं तो देश को एक बड़े सामाजिक संकट का सामना भी करना पड़ सकता है

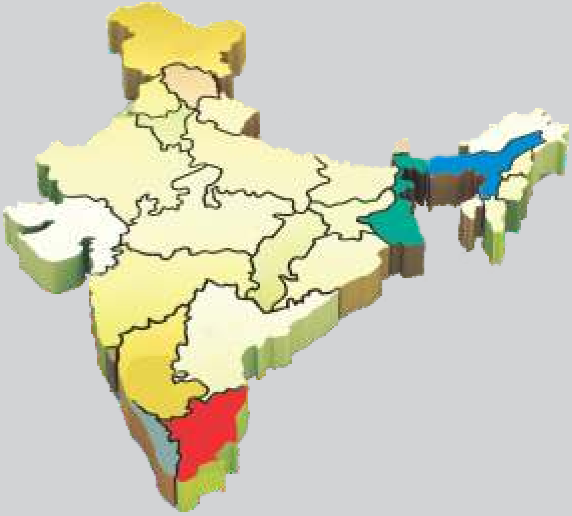

दर्ज की ही जाती है। चूंकि जनगणना के विपरीत जातिगत हिस्सेदारी का पता सर्वे आधारित अनुमान से होता है, इसलिए इस पर राजनीतिक बहस होती है। इस बहस में अक्सर यह बात भुला दी जाती है कि एनएफएचएस-एनएसएसओ के ताजा अनुमान मंडल आयोग की रिपोर्ट के अनुमान से बहुत अलग नहीं हैं।

दूसरी वजह, जातीय जनगणना की मांग सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण नीति से गहरे रूप में नत्थी है। यह एक अनुकूल सांख्यिकी गणना नहीं है। ऐसे दो कारक हैं, जो मायने रखते हैं-आरक्षण के लिए पात्र लोगों की सूची में अधिक से अधिक सामाजिक समूहों को शामिल करने की अनवरत इच्छा और दूसरा, देश में आरक्षण की सीमा 50 फीसदी तय करने संबंधी सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर विचार करने की मांग। मगर आरक्षित श्रेणी में अधिक समुदायों को शामिल करने से उन समूहों की संभावनाएं कम हो जाएंगी, जो पहले से आरक्षण व्यवस्था का लाभ उठा रहे हैं। ओबीसी के लिए 27 फीसदी आरक्षण देने की मंडल आयोग की सिफारिश 50 फीसदी आरक्षण की सीमा का प्रत्यक्ष परिणाम ही थी।

रिपोर्ट स्पष्ट करती है कि ओबीसी की आबादी (हिन्दू और गैर हिन्दू दोनों) भारत की कुल जनसंख्या की लगभग 52 फीसदी है। लिहाजा केन्द्र सरकार के अधीन सभी पदों में उसे 52 प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए। लेकिन यह सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय सीमा से खिलाफ जा सकता है। चूंकि ओबीसी के लिए प्रस्तावित आरक्षण इतना होना चाहिए, जो एससी और एसटी के लिए 22.5 प्रतिशत के साथ जोड़ने पर भी 50 फीसदी से नीचे रहे,

इसलिए मंडल आयोग केवल 27 फीसदी आरक्षण की सिफारिश करने को बाध्य है, भले ही ओबीसी की आबादी आरक्षण से करीब दोगुनी हो। हालांकि, सांविधानिक रूप से कहें, तो ओबीसी आरक्षण एससी-एसटी आरक्षण के समान नहीं है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण तो यही है कि एससी-एसटी आरक्षण के विपरीत, ओबीसी क्रीमीलेयर में आते हैं और एक सीमा के बाद वे आरक्षण का लाभ नहीं उठा सकते।

तीसरी वजह, ओबीसी को आरक्षण का पूरा फायदा नहीं मिला है, हां इससे उसे मदद जरूर मिली है। 17 जुलाई 2019 को केन्द्रीय राज्य मंत्री जितेन्द्रसिंह ने लोकसभा में एक लिखित उत्तर में बताया था कि एससी और एसटी का प्रतिनिधित्व आरक्षण के निर्धारित प्रतिशत (क्रमश: 15 और 7.5 फीसदी) से अधिक है। केन्द्र सरकार की सेवाओं में ओबीसी की हिस्सेदारी 21.57 प्रतिशत है, जो उनके लिए आरक्षित सीमा से कम है। हालांकि, सितंबर 1993 में शुरू होने के बाद से इसमें सिलसिलेवार वृद्धि ही हुई है। मौजूदा जानकारी के मुताबिक 1 जनवरी 2012 को ओबीसी की हिस्सेदारी 16.55 प्रतिशत थी, जो बढ़कर 1 जनवरी 2016 को 21.57 फीसदी हो गई है।

सवाल यह है कि इन लाभों ने वर्तमान में ओबीसी के रूप में वर्गीकृत बड़े समूह के भीतर उप-जातियों को किस हद तक मदद की है? यहीं वह तथ्य है, जिसने मोदी सरकार को 2017 के उप वर्गीकरण पर न्यायमूर्ति रोहिणी आयोग का गठन करने को मजबूर किया। केन्द्रीय सूची में 2,633 अन्य पिछड़ी जातियां है और इस साल की शुरूआत में आयोग ने उन्हें चार उप-श्रेणियों (1, 2, 3 और 4) में बांटने का प्रस्ताव रखा और 27 फीसदी को क्रमश: 2, 6, 9 और 10 प्रतिशत में बांटने की सिफारिश की। यदि यह मान लिया जाता है, तो इनका राजनीति पर बड़ा असर पड़ सकता है। विशेष तौर पर उत्तर भारत में, जहां यादव जैसे शक्तिशाली ओबीसी जाति के उदय ने 1990 के दशक को परिभाषित किया है। रोहिणी आयोग की सिफारिशें देश में एक बड़ी राजनीतिक बहस को जन्म देंगी, क्योंकि दबदबा रखने वाली ओबीसी जातियां, जिनके बारे में रोहिणी आयोग का मानना है कि वर्तमान नीति से उन्हें असमान रूप से फायदा पहुंचा है, अपना रूतबा गंवा सकती हैं।

चौथी वजह, सामान्य जनगणना के साथ जातिगत जनगणना को जोड़ने से ओबीसी के भीतर समानता लाने वाले कारकों को मदद नहीं मिल सकती। ओबीसी आरक्षण में वर्ग को ध्यान में रखना चाहिए, न कि जाति को। मौजूदा सरकार ने पहले ही 27 फीसदी ओबीसी आरक्षण के पुनर्गठन के लिए तैयारी शुरू कर दी है। इसका मतलब है कि एससी-एसटी समूहों के साथ ओबीसी की एक सरल गणना ओबीसी में समानता लाने में मददगार नहीं होगी। इतना ही नहीं, इस तरह की किसी भी कवायद में विभिन्न उप-जातियों की आर्थिक स्थिति की जानकारी जुटानी चाहिए, जो जनगणना में संभव नहीं है। हालांकि जिन समुदायों को ओबीसी के रूप में परिभाषित किया गया है, उनकी आर्थिक स्थिति समान है, जैसे दावे पर सवाल उठाने के हमारे पास पर्याप्त सुबूत हैं। जाहिर है, अगर आर्थिक पैमाने के साथ एक व्यापक जातिगत जनगणना आयोजित की जाती है और उसके आंकड़े कुछ समूहों को उनके मौजूदा लाभों स वंचित करने का प्रयास करते हैं, तो देश को एक बड़े सामाजिक-राजनीतिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।

(दैनिक हिन्दुस्तान से साभार)

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

पैगंबर मोहम्मद की हिदायतों को याद करने का दिन

फिरोज अहमद शेख

ईद मिलाद-उन-नबी का दिन इस्लाम मजहब का एक महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि इसी दिन इस्लाम धर्म के संस्थापक मोहम्मद साहब का जन्म हुआ था और इसके साथ ही इसी तारीख को उनका इंतकाल भी हुआ था।

इस्लामिक कैलेंडर के अनुसार इस्लाम के तीसरे महीने रबी-अल-अव्वल की 12वीं तारीख, 571 ई. के दिन ही मोहम्मद साहब दुनिया में तशरीफ लाए। इस दिन को पूरे विश्व भर के विभिन्न मुस्लिम समुदायों द्वारा काफी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। इस दिन लोग मस्जिदों में जाकर नमाज अदा करते हुए, मोहम्मद साहब के दिखाए हुए रास्ते पर चलते रहने का संकल्प लेते हैं। पैंगबर हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस्लाम के सबसे महान नबी और आखिरी पैंगबर थे। उनका जन्म मक्का शहर में हुआ। इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह इब्न अब्दुल मुत्तलिब और माता का नाम बीबी आमना था। कहा जाता है कि 610 ई. में मक्का के पास 'गारे हीरा' (गुफा) में उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। बाद में उन्होंने इस्लाम धर्म की पवित्र किताब कुरान की शिक्षाओं का उपदेश दिया। ईद मिलादुन्नबी के पर्व को मनाने

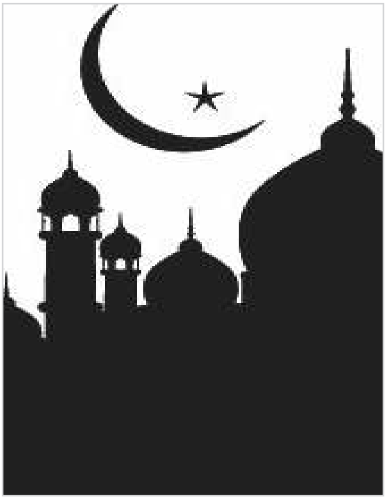

को लेकर शिया और सुन्नी समुदाय के अपने अलग-अलग मत हैं। जिसके कारण इसे विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है। सामान्यत: इस दिन मुस्लिमों के विभिन्न समुदायों द्वारा पैगंबर मोहम्मद के द्वारा बताए गए मार्गों और विचारों को याद किया जाता है तथा कुरान का पाठ किया जाता है। इसके साथ ही बहुत सारे लोग इस दिन मक्का मदीना या फिर दरगाहों जैसे पवित्र इस्लामिक दर्शन स्थलों पर जाते है। ऐसा माना जाता है कि जो भी व्यक्ति इस दिन को नियम से निभाता है। वह अल्लाह के और भी करीब हो जाता है और उसे अल्लाह की विशेष रहमत प्राप्त होती है।

इस दिन रात भर प्रार्थनाएं की जाती हैं, धर्म-सभाओं का आयोजन किया जाता है। मोहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित जुलूस निकाले जाते हैं। कोरोना के चलते सार्वजनिक रूप से कोई बड़े कार्यक्रम नहीं हो पाएंगे। घरों में ही लोग परम्परा का निर्वाह करेंगे। इस दिन हजरत मोहम्मद साहब के जन्म की खुशी में जो गीत गाया जाता है, उसे मौलूद कहा जाता है।

पैगंबर हजरत मोहम्मद के जन्म दिवस के अवसर पर घरों और मस्जिदों को सजाया जाता है। नमाजों और संदेशों को पढ़ने के साथ-साथ गरीबों को दान दिया जाता है। उन्हें खाना खिलाया जाता है। जो लोग मस्जिद नहीं जा पाते वो घर में कुरान पढ़ते हैं। हमें इस बात का अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए कि हम ईद मिलादुन्नबी के पारंपरिक महत्व को बनाए रखने का प्रयास करें ताकि लोगों के बीच मोहम्मद साहब के जीवन का सादगी, नेकी और भाईचारे का संदेश जा सके।

J.P. ORTHOPEDIC HOSPITAL
UDAIPUR

जे पी ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल
उदयपुर

27 वर्षों से आपके लिए

For More Visit Us : www.jporthohospital.com

24x7 HELPLINE No: +91 7229933999

Facilities

- ICU, Modular Theater
- Digital X-Ray
- Modular Plaster Room
- C-ARM Machine
- Physiotherapy
- All Kinds Of Orthopadic Surgery
- Nailing
- Plating
- Prosthesis,
- Fixator etc.

100, Main MB College Road, Kumharo Ka Bhatta,
Udaipur-313001 Tel : 0294-2413606
E-mail : jp_taruna@yahoo.co.in

भारत - राष्ट्र इस वर्ष स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मना रहा है। देश भर में पूज्य बापू, शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के सम्मान में गरिमापूर्ण आयोजन हो रहे हैं। इसी क्रम में देश इस माह 2 अक्टूबर को पूज्य बापू की डेढ़ सौ

आध्यात्मिक नेता भी थे गांधी

ओम शर्मा

सहनशीलता और मानवता के प्रति आदर के लिए सम्पूर्ण विश्व महात्मा गांधी को अपना आदर्श मानता है। उन्हें हिंसा के शांतिपूर्ण समाधान पाने की दृढ़ता और वचन बद्धता के साथ सामाजिक तथा आर्थिक न्याय के मुद्दे को सदैव आगे रखने के लिए भी याद किया जाता है।

महात्मा गांधी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के न केवल निर्भीक नेता थे बल्कि वे भारतीय समाज के एक महानतम आध्यात्मिक नेता भी थे। उनकी जीवनशैली में सौंदर्य बोध और नैतिकता का कठोर पालन, जो सभी विपरीत परिस्थितियों में भी बना रहा, सभी के लिए उनके प्रति सम्मान का विषय है। अपने साबरमती आश्रम में गांधी जी सदैव आम आदमी से मिलने के लिए उपलब्ध रहते थे। यही वह स्थान है जहां से समाज के वंचित वर्गों के लोगों को ऊपर उठाने का अभियान चला और पूरी मानव जाति में समानता का प्रसार हुआ। गांधीजी ने जीवन में मुक्ति, स्वतंत्रता और सफलता के लिए शिक्षा को एक सामूहिक हथियार के रूप में आगे बढ़ाया। गांधी जी ने अपनी प्रसिद्ध दाण्डी यात्रा नागरिक अवज्ञा आंदोलन के भाग के रूप में 1930 में आरंभ की, जिसके लिए उन्हें कारागार में डाला गया। जब 1932 में वे कारागार में थे, ब्रिटिश सरकार ने साम्प्रदायिक अधिनिर्णय घोषित किया, जिससे दबे हुए वर्ग के लोगों के लिए एक पृथक निर्वाचन प्रक्रिया को आरंभ किया गया। गांधीजी ने इस अधिनिर्णय का विरोध किया क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि भारतीय समाज को जाति के आधार पर बांटा जाए। सितम्बर 1932 में उन्होंने 6 दिन का व्रत किया और अन्य राजनैतिक नेताओं की मध्यस्थता के माध्यम से एक साम्य व्यवस्था अपनाने के लिए सरकार पर सफलता पूर्वक इस बात के लिए जोर डाला। इसके बाद गांधी जी ने अस्पृश्य व्यक्तियों के जीवन में सुधार लाने के लिए एक नया अभियान आरंभ किया, जिन्हें वे हरिजन

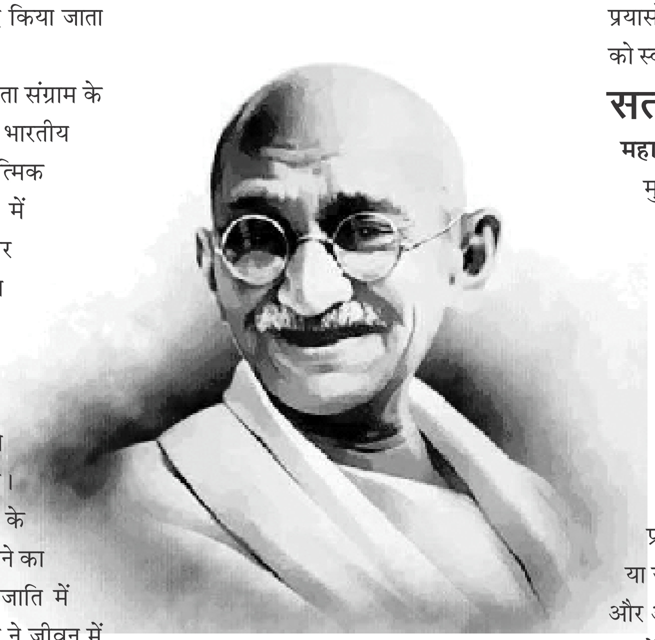

कहते थे, जिसका अर्थ है ईश्वर की संतान। उन्होंने 8 मई 1933 को हरिजनों को प्रोत्साहन देने के लिए 21 दिन के उपवास की घोषणा की। इस बार कारागार से बाहर आने पर गांधी जी ने स्वयं को हरिजनों के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया। उन्होंने कुछ साप्ताहिक पत्रिकाएं-अंग्रेजी में हरिजन, हिन्दी में हरिजन सेवक और गुजराती में हरिजन बंधु प्रकाशित कर तत्कालीन जातिगत भेदभाव, भेदभाव की घटनाओं और अस्पृश्यता पर जोरदार चोट की। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था अस्पृश्यता को हटाना अहिंसा की उच्चतम अभिव्यक्तियों में से एक है। समाज की बुराइयों के प्रति गांधीजी के सिद्धांतों ने उनके राजनैतिक आंदोलनों को उप निवेश राज से आजादी के लिए मजबूती से बांध दिया जैसे कि असहयोग आंदोलन, नागरिक अवज्ञा आंदोलन, दाण्डी मार्च और भारत छोड़ो आंदोलन। गांधी जी के प्रयासों से अंततः भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

सत्याग्रह की सार्थकता

महात्मा गांधी ने वंचित वर्ग के लोगों को मुख्य धारा में लाने की जरूरत पर बल दिया और उन्होंने स्वराज की आधारशिला पर इस कार्य को आगे बढ़ाने का सपना देखा। महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं तथा सामजिक सुधारकों के प्रयासों के परिणाम स्वरूप भारत का संविधान-भारत के सभी नागरिकों को कानून के सामने समानता का मूलभूत अधिकार प्रदान करता है। यह जाति, धर्म, वंश, लिंग या जन्म के आधार पर भेदभाव को रोकता है और अस्पृश्यता को समाप्त करता है। सत्य के मूल्यों की सार्थकता और अहिंसा को महात्मा गांधी द्वारा दशकों पहले आरंभ किया गया और ये मान्यताएं आज भी शाश्वत हैं। विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के आदर से हम एक-दूसरे की बात सुनें, आपस में बोले और सभी की प्रशंसा करें। एक अनोखी लोकतांत्रिक व्यवस्था वह है जहां प्रत्येक के लिए चिंता, प्रमुख रूप से निर्धनों, महिलाओं और वंचित वर्ग के समूहों की सेवा की। भारत में तीव्र गति से प्रगति हो रही है, यह महत्वपूर्ण है कि नागरिक यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर कार्य करें कि प्रगति में सच्चे, अर्थों में सभी को शामिल किया जाए और विकास की इस प्रक्रिया में समाज के कमजोर वर्ग को भी समान स्तर पर प्रतिभागिता प्रदान की जाए।

वीं जयंती के साथ 'जय किसान-जय जवान' का नारा देने वाले महान सपूत पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर जी शास्त्री की 107वीं जयंती भी मना रहा है। प्रस्तुत है दोनों महापुरुषों के जीवन आदर्शों को इंगित करते आलेख

दूर्वा सा हो व्यवहार

राजकमल जैन

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद लाल बहादुर शास्त्री ने यह गरिमामय पद ग्रहण किया। उनका जीवन सादगी, अनुशासन और समर्पण का जीवन्त संदेश है। गांधीवादी विचारधारा के प्रबल समर्थक शास्त्री जी ने 1965 के युद्ध में पाकिस्तान को नाको चने चबवाए। उनका नारा 'जय जवान-जय किसान' भारतीयों के श्रम और स्वाभिमान का प्रतीक है।

यदि इरादे सच्चे हों तो परिस्थितियां कैसे भी हों, मंजिल तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता। यह सीख हमें लाल बहादुर शास्त्री के जीवन से मिलती है। उनका बचपन पैसे के अभाव में बीता और छोटी उम्र में पिता को खोने के बावजूद उन्होंने अपने आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण का सपना देखा और उस सपने को पूरा करने के लिए वे पूरी तरह जागरूक रहें। पैसे न होने पर वे गंगा नदी को तैरकर पार करते और स्कूल जाते। उन्होंने पढ़ाई जारी रखने के लिए अपने रिश्तेदारों के घरेलू काम भी किए।

मन की बात सुनें

हम सभी की एक खास प्रवृत्ति होती है, जो हमें भविष्य की राह पर बढ़ने की ओर प्रेरित करती है। इसे हम अपने मन की बात के रूप में भी समझ सकते हैं। यह हमें सही कार्य के लिए प्राकृतिक रूप से अग्रसर करती है। यदि आप अपने मन की बात सुनते हैं तो निश्चित तौर पर अपने जीवन के सपनों को पूरा कर सकते हैं। शास्त्री जी ने भी देश की सेवा में जीवन समर्पित करने की अपने मन की बात को सुना और स्वाधीनता संग्राम आंदोलन से जुड़े। जिसमें उन्होंने अहम योगदान दिया।

परिवार और कार्य में तालमेल

सच्ची सफलता वहीं है, जब आप अपने काम के साथ परिवार के साथ भी सही तालमेल रख पाते हैं। शास्त्री जी ने अपनी व्यस्तताओं के बावजूद परिवार का भी पूरा ध्यान रखा। यहां तक कि जब वे जेल में थे, तब भी उन्होंने अपनी मां, पत्नी और बच्चों का ध्यान रखने में कोई कसर नहीं रखी।

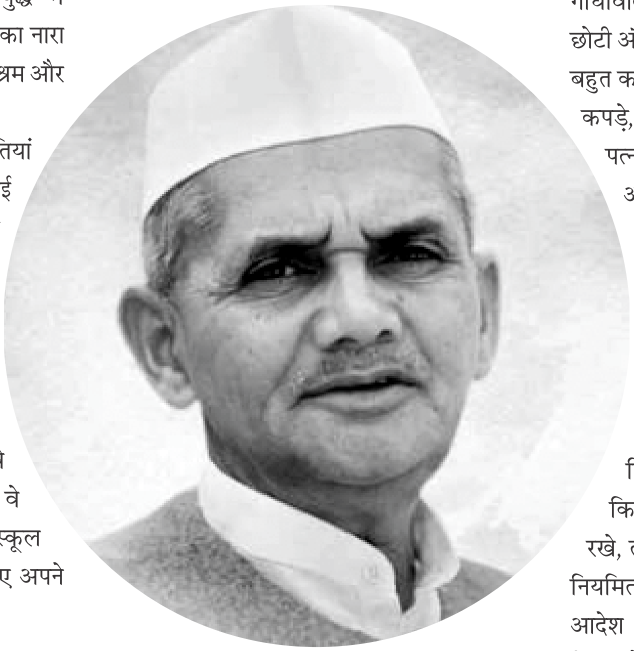

न करें दुरुपयोग कभी

लाल बहादुर शास्त्री के बेटे सुनील शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'लाल बहादुर शास्त्री: मेरे बाबूजी' में उनके जीवन से जुड़े प्रसंग साझा किए हैं। एक बार उन्होंने अपने पिता की सरकारी कार का उपयोग किया। शास्त्री को यह बात नागवार गुजरी। उन्होंने किलोमीटर का हिसाब कर पैसा सरकारी खाते में जमा करवाया।

मेज पर रखते थे दूर्वा

शास्त्रीजी की मेज पर हमेशा हरी दूब दूर्वा रहती थी। जब उनसे लोग पूछते कि आप फूलों को मेज पर जगह क्यों नहीं देते, तो उनका जवाब होता... फूल लोगों को आकषित तो करते हैं, पर कुछ दिन में मुरझाकर गिर जाते हैं। घास वह आधार है जो हमेशा रहती है। मैं लोगों के जीवन में दूर्वा की तरह ही नम्र बनकर रहना चाहता हूं। उनकी यह सोच जीवन में सादगी का परिचायक था।

हर चीज का है उपयोग

गांधीवादी विचारधारा के समर्थक शास्त्री हर छोटी और पुरानी चीज को उपयोगी मानते थे। वे बहुत कम साधनों में जीवन जीते थे। जब उनके कपड़े, खासतौर पर कुर्ते फट जाते तो वे उसे पत्नी को देकर उनसे रूमाल बनाने का अनुरोध करते। वे सबसे कहते कि जीवन में कोई चीज अनुपयोगी नहीं होती। बस समझदारी से उसके इस्तेमाल की जरूरत है।

देशहित सर्वोपरि

शास्त्री के प्रधानमंत्रित्व काल में देश ने अकाल व भूखमरी का सामना किया। विपत्ति की इस घड़ी में उन्होंने कहा था कि देश का हर नागरिक एक दिन का व्रत रखे, तो भूखमरी खत्म हो जाएगी। खुद वे भी नियमित व्रत रखते थे। परिवार को भी यही आदेश था। वे देश के प्रति निष्ठा को अन्य निष्ठाओं से पहले मानते थे। यह पूर्ण निष्ठा है, क्योंकि इसमें कोई अपेक्षा नहीं कर सकता कि बदले में उसे क्या मिलता है।

भुला दें वैमनस्य

हरिशचन्द्र इंटर कॉलेज में हाईस्कूल की शिक्षा ग्रहण करने के दौरान एक बार उनसे बीकर टूट गया था। स्कूल के कार्मिक देवीलाल ने उन्हें इस गलती पर थप्पड़ मारा था। रेल मंत्री बनने के बाद 1954 में एक कार्यक्रम में शास्त्री जब मंच पर थे तो देवीलाल उन्हें दिखे। शास्त्री ने उन्हें पहचान लिया और मंच पर बुलाकर गले लगा लिया। वैमनस्य को भुलाने से न सिर्फ व्यक्तित्व निखरता है, बल्कि सोच भी सकारात्मक होती है।

सुखी व सफल दाम्पत्य की मंगलकामना का पर्व करवा चौथ

रेणु शर्मा

वैवाहिक जीवन की सफलता के लिए पति-पत्नी दोनों का मन मिलना बहुत जरूरी है। चन्द्रमा को अर्ध्य देने की परम्परा की पृष्ठभूमि भी मन से मन को जोड़ने की ही है। भारतीय दर्शन में चन्द्रमा को मन का प्रतीक माना गया है। दाम्पत्य जीवन में कोई विघ्न-बाधा न आए, दोनों के बीच समझदारी विकसित हो, इस मंगलकामना के साथ करवा चौथ का व्रत किया जाता है। यह गणेशजी का व्रत भी है, जो दाम्पत्य जीवन में भी सद्बुद्धि देते हैं। धर्मग्रंथों से यह विदित होता है कि महाभारत काल में श्रीकृष्ण ने द्रोपदी को पांडवों की रक्षा और विजय हेतु करवा चौथ का व्रत करने का परामर्श दिया था। कहा जाता है कि इस व्रत के प्रभाव से महाभारत के युद्ध में पांचों पांडव सुरक्षित रहे और द्रोपदी का सुहाग अटल रहा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चतुर्थी तिथि के स्वामी श्रीगणेश हैं और यदि आप और गौर करेंगे, तो यह पाएंगे की करवा चौथ का व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। देखा जाए तो यह संकटनाशक गणेश चतुर्थी व्रत है। यह तो सब जानते हैं कि गणेशजी विघ्नेश्वर हैं। दाम्पत्य जीवन तभी सुखी और सफल हो सकता है, जब उसमें कोई विघ्न न आए। गणेशजी बुद्धि के देवता है। वैवाहिक जीवन को सफल बनाए रखने के लिए पति-पत्नी दोनों में सद्बुद्धि का होना परम आवश्यक है, लेकिन करवा चौथ का व्रत रखने वाली अधिकांश महिलाएं यह नहीं जानती कि करवा चौथ का गणेशजी से कोई संबंध भी है। आधुनिकता के नीचे इस व्रत की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि दब गई है। पारिवारिक सुख पाने के लिए शिव परिवार की पूजा का विधान पूर्णतः प्रासंगिक हैं, क्योंकि त्रिदेवों में केवल भगवान शंकर के पास ही भरा-पूरा परिवार है। करवा चौथ में चंद्रमा की पूजा और उसे अर्ध्य देने का भी प्रावधान है। ऐसा इसलिए, क्योंकि भारतीय दर्शन में चन्द्रमा को मन का प्रतीक माना गया है। ज्योतिष में भी चन्द्रमा को मन का नियंत्रक बताया गया है। संभवतः इसलिए इस व्रत का विधान बना, क्योंकि शादी के सफल होने के लिए पति-पत्नी दोनों का मन मिलना बहुत जरूरी है। चन्द्रमा को अर्ध्य देने की रस्म के पीछे मन को मन से जोड़ने का भाव ही छुपा है। करवा चौथ के दिन स्त्री के साज-श्रृंगार का मतलब है कि विवाहित जीवन की भावनाएं और इच्छाएं सदैव युवा रहें और वह समय बीतने के साथ उबाऊ न बने। वस्तुतः करवा चौथ विवाह के समय दिए गए वचनों को याद दिलाता है, लेकिन यह पति-पत्नी दोनों के लिए आवश्यक है। क्योंकि विवाह के समय दोनों को वचनबद्ध किया जाता है। आज जरूरत इस बात की है कि करवा चौथ के पर्व को आडंबर की परिधि से बाहर लाकर इसे ऐसा दाम्पत्य महापर्व बनाया जाए। जिसमें पति-पत्नी दोनों की समान सहभागिता हो। तभी इस युग में इस व्रतोत्सव की सार्थकता साबित होगी। करवाचौथ में कर्मकांड की नहीं, समर्पण भाव की प्रधानता होनी चाहिए। विवाहित जीवन में सुख-शांति पति-पत्नी दोनों पर ही निर्भर होती है।

पूजा पाठ और परम्परा

करवाचौथ को सबसे कठिन उपवासों में से एक माना जाता है। व्रत की शुरुआत सुबह सूरज उगने से पहले होती है और व्रत रात में चांद निकलने के बाद ही खत्म किया जाता है। करवा चौथ से जुड़ी दो कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा यम और सावित्री से जुड़ी हुई और दूसरी करवा और यम से संबंधित है। दोनों कथाओं के मूल में पतिव्रता पत्नी है, जो अपने तप और व्रत के बल पर अपने पति के प्राण यम के हाथों से छीन कर लाने में सफल होती है। करवा चौथ के दिन पूजा और विधियों की शुरुआत सुबह सूरज निकलने से पहले ही शुरू हो जाती है। इस दिन महिलाएं सूर्योदय से पहले उठकर भगवान शिव, पार्वती, गणेश, कार्तिकेय और चन्द्रमा की पूजा करती है। सास अपनी बहुओं को खाना खाने के लिए देती है, जिसे सरगी कहा जाता है। इसके बाद चन्द्रमा निकलने के बाद ही महिलाएं कुछ खाती हैं या पीती हैं। शाम का वक्त सजने-संवरने और पूजा की तैयारियों का होता है। उसके बाद शाम को पूजा की जाती है। इस पूजा के लिए महिलाओं को उनकी मां अपने घर से बाया भेजती है। यह बाया मुख्य रूप से सास के लिए होता है। इसमें मिठाई, मेहंदी, फल और साड़ी होती है। सूर्य के अस्त होने से पहले महिलाएं इकट्ठा होकर पूजा स्थल के चारों और घेरा बनाकर बैठ जाती हैं और पार्वती मां की पूजा करती हैं। पूजा में करवाचौथ का गीत गाते वक्त वे बाया को एक-दूसरे के हाथों में बढ़ाती हैं। इसके बाद करवाचौथ की कथा कही जाती है। चांद निकलने पर छलनी से चंद्रमा को देखकर और अर्ध्य चढ़ाने के बाद पति के हाथों पानी पीकर करवाचौथ का व्रत तोड़ा जाता है।

With Best Compliments From

Universal
Power Industries

Engineers & Manufacturer :

✦ Monoblock Pump ✦ Power Fector Correction ✦ AMF Panel ✦ Synchronizing of DG ✦ Switch Gear LT/HT ✦ Power Control Panel ✦ Motor Control Panel ✦ Stone Process Machine Panel ✦ Automation Panel ✦ Automatic Power Fector Panel

1, SPL. Com, Industrial Estate, Pratap Nagar, Udaipur-313 001
Ph. : 0294-2490230 (W) 2490373 (R)

Telemecanique
Square D
Merlin Gerin

Authorised Service Contractors
Schneider Electric India Pvt. Ltd.

पाक प्रशिक्षित आतंकी मॉड्यूल का भंडाफोड़

नंद किशोर शर्मा

भारत लम्बे समय से सीमापार आतंकवाद झेल रहा है। यह तो पूरा विश्व जान और देख रहा है कि भारत में आतंकवाद का सबसे बड़ा और एकमात्र कारण पड़ोसी देश पाकिस्तान है। सीमापार आतंकवाद का सिलसिला अभी भी जारी है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल और यूपी एटीएस ने पाकिस्तान समर्थित एक बड़े आतंकी मॉड्यूल का सितम्बर के दूसरे सप्ताह में भंडाफोड कर 10 शहरों में छापेमारी की जहां से छह संदिग्धों को गिरफ्तार किया गया है। इसमें से दो पाक खुफिया एजेंसी आईएसआई से प्रशिक्षण लेकर लौटे है। ये लोग दिल्ली समेत कई शहरों में एक साथ हमले की फिराक में थे। खुफिया एजेंसियों से इनपुट के बाद कई राज्यों में ऑपरेशन चलाया गया और राजस्थान के कोटा से मुंबई निवासी जान मोहम्मद शेख उर्फ समीर कालिया को धर दबोचा गया। इससे जानकारी मिलने के बाद दिल्ली के जामिया से ओसामा उर्फ सामी और सराय काले खां से मोहम्मद अबू बकर गिरफ्तार हुआ। तीन संदिग्धों को यूपी एटीएस ने पकड़ा। आईएसआई, दाऊद इब्राहिम के भाई अनीस इब्राहिम की मदद से आगामी त्योहारों पर भारत में बड़े हमले की योजना बना रहा है और इसी के लिए इन्हें प्रशिक्षित किया था। यूपी एटीएस के एडीजी प्रशांत कुमार के अनुसार खुफिया इनपुट के बाद लखनऊ, प्रयागराज, रायबरेली और प्रतापगढ़ में एक साथ छापेमारी की गई। प्रयागराज के करेली से जीशान कमर, रायबरेली से मूलचंद उर्फ लाला उर्फ सज्जू और लखनऊ के मानकनगर प्रेमवती नगर से मोहम्मद आमिर जावेद को गिरफ्तार किया गया है। जीशान के कब्जे से अतिसंवदेनशील आईईडी भी बरामद हुई है। इसमें आरडीएक्स और अमोनियम नाइट्रेट के इस्तेमाल की सूचना है। पिछले कुछ समय से भारत यह आशंका जताता रहा है कि अफगानिस्तान में तालिबान के सत्ता में आने के बाद पाकिस्तान की भारत विरोधी गतिविधियों में तेजी आएगी। इन आतंकियों की गिरफ्तार ने भारत की इस आशंका को और पुष्ट कर दिया है। वैसे सुरक्षा एजेंसियां अपने स्तर पर काफी सतर्क हैं, लेकिन आतंकियों का समानांतर नेटवर्क चलते रहना आंतरिक सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती तो पैदा कर ही रहा है। भारत ने पाकिस्तान की इन्हीं शैतानी हरकतों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में यह कहने में संकोच नहीं किया कि यह देश संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकियों के साथ अन्य आतंकवादियों का न केवल खुलकर समर्थन करता है, बल्कि उन्हें प्रशिक्षण, पैसा

आईएसआई ने तैयार किया मॉड्यूल

आरोपी ओसामा 22 अप्रेल, 2021 को सलाम एयर के विमान से लखनऊ से मस्कट गया था। वहां उसकी मुलाकात इलाहाबाद निवासी जीशान से हुई। जीशासन पाकिस्तान में प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए भारत से वहां पहुंचा था। उसके साथ 15–16 बांग्ला भाषी लोग भी थे।

पाक में प्रशिक्षण

इसके बाद उन्हें ग्वादर बंदरगाह, पाकिस्तान के पास स्थित शहर जियोनी ले जाया गया। वहां उनका स्वागत एक पाकिस्तानी ने किया, जां उन्हें पाकिस्तान के थट्टा में एक फार्म हाउस में ले गया। फार्म हाउस में तीन पाकिस्तानी थे। इनमें से दो जब्बारंद और हमजा ने उन्हें प्रशिक्षण दिया। ये दोनों पाकिस्तानी सेना से थे। उन्होंने सैन्य वर्दी पहन रखी थी। उन्हें दैनिक उपयोग की वस्तुओं की मदद से बम और आईईडी बनाने व आगजनी करने का प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें छोटे हथियारों और एके 47 के प्रयोग करने का भी प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षण 15 दिनों तक चला। उसके बाद उन्हें उसी मार्ग से मस्कट वापस ले जाया गया। जहां से भारत में पहुंचकर उन्होंने अपना काम गुप्त रूप से शुरू किया। ऐसा नहीं है कि आइएसआइ पहली बार ऐसी साजिशें रच रही है। इतिहास गवाह है कि पिछले तीन दशक से भी ज्यादा समय से सीमापार आतंकवाद से लेकर 1992 के मुंबई बम कांड, मुंबई पर आतंकी हमले, भारत की संसद से लेकर महत्वपूर्ण सैन्य ठिकानों पर आतंकी हमलों तक की साजिश को अंजाम आइएसआइ और पाकिस्तान सेना ने ही दिया। भारत को बहुत सर्तक रहने की आवश्यकता है। राजनैतिक दलों को भी राष्ट्रीय सुरक्षा के मामले पर गहन चिंतन के साथ एक राय होना पड़ेगा। पिछले दिनों पाकिस्तान ने भारत से खुफिया जानकारी हासिल करने का लालच देकर कुछ लोगों को तैयार किया है। इसलिए घर में बैठे राष्ट्रद्रोहियों की धरपकड़ और निगरानी जरूरी है।

Wish You a Happy Navratri

SAH POLYMERS LIMITED

(Manufacturer of HDPE/PP Laminated &
Unlaminated Woven Fabric, Sacks and F.I.B.C.)

E-260-261, M.I.A., Madri, Udaipur - 313003
Ph. : 0294-2490242, 2493889, TeleFax : 0294-2490534
E-Mail : info@sahpolymers.com, Website : www.sahpolymers.com

टोक्यो में दिव्यांग खिलाड़ियों का ऐतिहासिक प्रदर्शन, भारतीय दल के 31 फीसदी खिलाड़ियों ने जीते पदक

उम्मीद से आगे तक हौसलों की उड़ान

राजस्थान की अवनि ने दो पदक जीते, गहलोत सरकार देगी उसे 3 करोड़ रुपए, नोएडा के जिला कलक्टर भी ले आए रजत पदक

जापान के टोक्यो में पैरालम्पिक खेलों का 5 सितम्बर को समापन हुआ। इन खेलों की सुनहरी यादें हर भारतवासी के दिल में हमेशा ताजा रहेंगी। ये खेलों का वह संस्करण है, जहां हमारे पैरा एथलीटों ने एक के बाद एक पदक जीत कर इतिहास रचा है। इस प्रदर्शन से प्रेरणा लेकर अब युवा भारतीय दिव्यांग खिलाड़ी 2024 में पेरिस में होने वाले खेलों के लिए और अधिक परिश्रम करेंगे।

निष्ठा शर्मा

टोक्यो पैरालम्पिक खेलों को हर भारतवासी हमेशा याद रखेगा। खेलों के पिछले 11 संस्करणों में भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने कुल 12 पदक जीते थे, लेकिन टोक्यो में तो कमाल ही हुआ। वहां भारत के खाते में 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य समेत कुल 19 पदक आए, जो इन खेलों के इतिहास में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। सन 2016 के रियो पैरालम्पिक में भारत पदक तालिका में 43वें स्थान पर था, पर इस बार छलांग लगाते हुए 24वें स्थान पर पहुंचा। भारत इन खेलों में 1968 से सहभागिता कर रहा है। लेकिन 2021 से पहले तक किसी आयोजन में उसकी गिनती 4 पदक से आगे नहीं बढ़ी। इस बार हमारे होनहार दिव्यांग खिलाड़ी पिछली सर्वोच्च पदक संख्या से 4 गुना आगे निगल गए। इस सफलता ने हर स्तर पर दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए खेल-संस्कृति में संभावनाओं के नए द्वार खोल दिए हैं।

अवनि लेखरा
स्पर्द्धा : महिला 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग स्टैंडिंग एसएच 1
संघर्ष : 11 साल की उम्र में सड़क दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी टूटी

मनीष नरवाल
स्पर्द्धा : पी 4 मिक्स्ड 50 मीटर पिस्टल एसएच 1
संघर्ष : हरियाणा के 19 वर्षीय मनीष नरवाल के दाहिने हाथ में विकार है।

5 स्वर्ण जीतकर बनाया इतिहास

सुमित अंतिल
स्पर्द्धा : पुरुषों की भाला फेंक एफ 64
संघर्ष : 2015 में दुर्घटना में अपना बायां पैर खो दिया।

कृष्णा नागर
स्पर्द्धा : बैडमिंटन पुरुष एकल एसएच 6
संघर्ष : इस प्रतिभावान खिलाड़ी को छोटे कद का विकार है।

प्रमोद भगत
स्पर्द्धा : बैडमिंटन पुरुष एकल एसएल 3
संघर्ष : भगत को पांच साल की उम्र में पोलियो हो गया था

8 खिलाड़ियों ने रजत पदक जीतकर देश की चांदी कराई

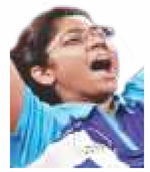

भाविनाबेन
स्पर्द्धा : महिला एकल टेबल टेनिस क्लास 4
संघर्ष : बारह महीने की उम्र में पोलियो की शिकार हुई।

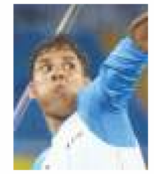

देवेन्द्र झाझड़िया
स्पर्द्धा : पुरुषों की भाला फेंक एफ 46 **संघर्ष :** 8साल की उम्र में बिजली तार छू जाने से बायां हाथ गंवाना पड़ा।

प्रवीण कुमार
स्पर्द्धा : ऊंची कूद टी 64
संघर्ष : पैर में जन्मजात कूल्हे को बाएं पैर से जोड़ने वाली हड्डियां प्रभावित।

मरियप्पन थंगावेलु
स्पर्द्धा : ऊंची कूद टी 63
संघर्ष : पांच साल की उम्र में बस से कुचलने से उनका एक पैर कटा गया।

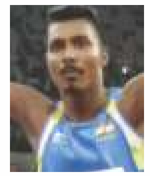

निषाद कुमार
स्पर्द्धा : ऊंची कूद टी 47
संघर्ष : आठ साल की उम्र में दायां हाथ घास काटने वाली मशीन से कटा।

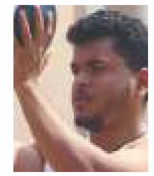

योगेश
स्पर्द्धा : पुरुषों का डिस्कस थ्रो एफ 56
संघर्ष : आठ साल की छोटी उम्र में लकवे के शिकार हुए।

सिंहराज
स्पर्द्धा : पी 4 मिक्स्ड 50 मीटर पिस्टल एसएच 1
संघर्ष : सिंहराज जन्म से ही पोलियोग्रस्त है।

सुहास यथिराज
स्पर्द्धा : बैडमिंटन पुरुष एकल एसएल 4
संघर्ष : नोएडा के जिला कलेक्टर के टखनों में विकार है।

अवनि और सिंहराज ने कांस्य जीत दोहरी सफलता हासिल की

सिंहराज अधाना
स्पर्द्धा : 10 मीटर पिस्टल शूटिंग एसएच 1
संघर्ष : पत्नी के गहने बेच घर में बनाई शूटिंग रेंज।

शरद कुमार
स्पर्द्धा : पुरुषों की ऊंची कूद टी 63
संघर्ष : दो वर्ष की उम्र में पोलियों की नकली खुराक से बाएं पैर में लकवा।

हरविंदरसिंह
स्पर्द्धा : पुरुष व्यक्तिगत रिकर्व तीरंदाजी
संघर्ष : डेढ़ साल की उम्र में डेंगू होने पर गलत इंजेक्शन से पैरों ने काम करना बंद किया।

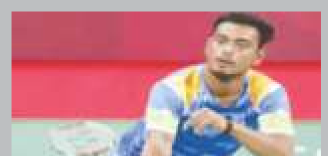

मनोज सरकार
स्पर्द्धा : बैडमिंटन पुरुष एकल एसएल 3
संघर्ष : एक साल की उम्र में ही पोलियो से ग्रस्त हो गए थे।

सुंदरसिंह
स्पर्द्धा : पुरुषों की भाला फेंक एफ 46
संघर्ष : 25 साल के एथलीट ने 2015 में एक दुर्घटना में अपना बायां हाथ गंवा दिया था।

अवनि लेखरा
स्पर्द्धा : 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन शूटिंग एसएच 1
संघर्ष : पिता मन बहलाने के जाते थे रेंज। वहीं से आगाज।

प्रधानमंत्री से मुलाकात

टोक्यो पैरालंपिक में भाग लेने वाले खिलाड़ियों ने 9 सितम्बर को दिल्ली में प्रधानमंत्री से भेंट की और उन्हें पैरालंपिक मेडल विजेता खिलाड़ियों के ऑटोग्राफ वाली स्टॉल भेंट की। दल का नेतृत्व रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया (जयपुर) ने किया। प्रधानमंत्री ने प्रत्येक खिलाड़ी से उसकी सफलता को लेकर प्रश्न किए व उनकी हौसला अफजाई की। प्रधानमंत्री ने उन्हें शुभकामनाओं के साथ खिलाड़ी आगे भी अच्छा प्रदर्शन कर सकें, इसके लिए हर संभव उपाय का आश्वासन दिया। खिलाड़ियों ने पहली बार इस स्तर पर दुलार और सम्मान देने के लिए प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त किया।

पदक तालिका

क्रम	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
01	चीन	96	60	51	207
02	ग्रेट ब्रिटेन	41	38	45	124
03	अमेरिका	37	36	31	104
04	आरपीसी	36	33	49	118
24	भारत	05	08	06	19

54 भारतीय एथलीट ने इस बार पैरालंपिक में दावेदारी पेश की, जो अब तक सबसे ज्यादा थी

दल का हर सदस्य विजेता

हर भारतीय की स्मृति में ये खेल अंकित रहेंगे और खेलों के प्रति जुनून के लिए खिलाड़ियों की पीढ़ियों को प्रोत्साहित करते रहेंगे। इस दल का हर सदस्य विजेता और प्रेरणास्रोत है। यह ऐतिहासिक उपलब्धि है।

नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री

यह तो शुरुआत है

मैं यह पदक जीतकर बहुत खुश हूं। मैं इस अहसास को बयां नहीं कर सकती। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कि मैं दुनिया में शीर्ष पर हूं। मैं सभी भारतीयों को यह पदक समर्पित करती हूं। यह तो शुरुआत है। मुझे आगे और स्पर्द्धाओं में भाग लेना है तथा और पदक जीतने हैं।

अवनि लखेरा
(स्वर्ण पदक जीतने पर)

डॉ. लईक की पुस्तकों का विमोचन

उदयपुर। भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर के निदेशक डॉ. लईक हुसैन द्वारा लिखित पुस्तक नाट्य एवं अन्य कलाएं तथा उन्हीं के द्वारा सम्पादित पत्रिका रंगायन का गत दिनों विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की निदेशक किरण सोनी गुप्ता थी। अध्यक्षता भारतीय लोक कला मण्डल के अध्यक्ष उद्योगपति एवं समाजसेवी सलिल सिंघल ने की। विमोचन समारोह में अतिविशिष्ट अतिथि के तौर पर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत, पद्मपत सिंघानिया विवि के कुलपति हरिप्रसाद होनवाड़, लोकसेवा आयोग के सदस्य परमेन्द्र दशोरा व जिला कलक्टर चेतन देवड़ा थे। विशिष्ट अतिथि सीसीआरटी सलाहकार दिनेश कोठारी थे। विद्यापीठ के कुलपति सारंगदेवोत ने कहा कि वर्तमान समय में किताबों का महत्व और भी बढ़ गया है क्योंकि डिजिटलाइजेशन के इस समय में लोगों ने किताबें लिखना और पढ़ना बंद कर दिया है, ऐसे समय में किताब लिखना बहुत ही हिम्मत का काम है।

अरविंदर को अंतरराष्ट्रीय फैलोशिप

उदयपुर। अर्थ स्किन एंड फिटनेस तथा अर्थ डायग्नोस्टिक के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह ने फेस एस्थेटिक की स्वीडन की फैलोशिप की अर्हता हासिल की है, जिससे अब बिना सर्जरी के चेहरे की झुर्रियां हटाना, रंग गोरा करना, होंठों को मनचाहा आकार देना, फेस लिफ्ट, गमी स्माइल, ठोढ़ी की खूबसूरती बढ़ाना, चेहरे से दाग व पिगमेंट हटाना आदि सुविधाएं अब उदयपुर में भी उपलब्ध हो जाएंगी। डॉ. सिंह जर्मनी तथा न्यूयॉर्क द्वारा पहले ही ट्रेनिंग ले चुके हैं तथा इंडियन एस्थेटिक सोसायटी के लाइफ मेम्बर भी हैं। अरविंदरसिंह ने स्किन स्पेशलिस्ट का कोर्स कर कनाडा बोर्ड ऑफ ऐस्थेटिक मेडिसिन की सदस्यता भी प्राप्त की।

राजसमंद जिला क्रिकेट संघ

सीपी अध्यक्ष, वैभव कोषाध्यक्ष चुने गए

राजसमंद। जिला क्रिकेट संघ के जेके स्टेडियम कांकरोली में हुए चुनावों में निवर्तमान अध्यक्ष और राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन अध्यक्ष वैभव गहलोत संघ के दोबारा निर्विरोध कोषाध्यक्ष चुने गए। कार्यकारिणी में कुल 21 पदाधिकारी और सदस्य बनाए गए हैं। यह जानकारी संघ के सचिव गिरिराज सनाढ्य ने दी।

हिंगलाज दान नए आईजी

उदयपुर। आईपीएस हिंगलाज दान ने गत दिनों उदयपुर रेंज आईजी का कार्यभार संभाला। इससे पहले वे एसीबी मुख्यालय जयपुर में आईजी थे। उल्लेखनीय है कि हिंगलाज दान जुलाई2019 से जनवरी 2021 तक उदयपुर में एसीबी में डीआईजी रहे है। 8 महीनों बाद उनकी उदयपुर में वापसी हुई है। 2004 बैच के आईपीएस हिंगलाज दान 2005 से 2007 तक यहां प्रशिक्षु आईपीएस भी रहे। इसके अलावा वे कोटा, चूरू, भरतपुर, अजमेर, सिरोही और झालावाड़ में एसपी और जोधपुर में डीसीपी रह चुके हैं।

बड़ोला हुंडई के 2 वर्ष पूर्ण

उदयपुर। बड़ोला हुंडई के उदयपुर में 2 वर्ष पूर्ण होने पर जिला कलक्टर चेतन देवड़ा ने केक काटकर शुभकामनाएं दी तथा कोरोना के बाद कारों की बिक्री पर संतोष जताया। देवड़ा ने ऑटोमोबाइल क्षेत्र में काम करने वालों को रोजगार के लिए अपार संभावना का दावा किया। निदेशक रोहित बड़ोला ने कंपनी के नए मॉडल के बारे में बताया। इस मौके पर एमडी नक्षत्र तलेसरा, दिलीप तलेसरा व विवेक बड़ोला आदि उपस्थित रहे।

लाचिंग: हुंडई मोटर्स लि. के निदेशक तरूण गर्ग ने कम्पनी की नई आई-20 एन लाइन कार की लाचिंग की। इस कार में डुअल एग्जॉस्ट, नए अलॉय व्हील्स, रेड एक्सेंट के साथ नए ग्रिल हैं, जो इसे स्पोर्टी लुक देते हैं।

अलका शर्मा को अवार्ड

उदयपुर। ग्लोबल एजुकेशन समिट एवं सेंटर ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट फाउंडेशन ने सेंट्रल पब्लिक स्कूल, रॉकवुड्स हाई स्कूल एवं रॉकवुड्स इंटरनेशनल स्कूल की चेयरपर्सन अलका शर्मा को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा है। इसी चरण में फाउंडेशन ने शर्मा को इंडियाज़ सक्सैसफुल लीडर्स एंड स्कूल्स के गौरव से सम्मानित किया। शर्मा को यह अवार्ड गुडगांव में हुए कार्यक्रम में ग्लोबल टॉक्स और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिया गया।

कैसा लगा यह अंक

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा।

pankajkumarsharma2013@gmail.com

और हथियार भी देता है, लेकिन इससे पाकिस्तान की सेहत पर शायद ही कोई असर पड़े। वास्तव में वह तब तक सही रास्ते पर नहीं आने वाला जब तक भारत उसे उसके किए की सजा देने के इरादे नए सिरे से जाहिर नहीं करता।

दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा और यूपी एटीएस के ऑपरेशन में गिरफ्तार आतंकी दिल्ली, यूपी एवं महाराष्ट्र समेत छह प्रदेशों को दहलाने की साजिश रच रहे थे। ये दहशतगर्द त्योहारी सीजन में इन प्रदेशों के 15 शहरों में सिलसिलेवार धमाके करने की तैयारी में थे। इसके लिए रेकी की जा रही थी। साजिश को अंजाम देने के लिए मॉड्यूल के अलग-अलग संदिग्धों और उनके नेटवर्क से जुड़े लोगों के जिम्मे अलग-अलग काम सौंपा गया था।

निवेश की नींव पर नया कश्मीर

अमित शर्मा

जम्मू कश्मीर से धारा 370 हटाने के बाद से राज्य का माहौल शनैः-शनैः बदलता दिखाई दे रहा है। अराजकता व आतंकवाद की घटनाएं भी कुछ हद तक नियंत्रण में हैं और मुठभेड़ में कई आतंकी ढेर भी हुए हैं, लेकिन संकट पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। आतंकवादियों ने घाटी के युवाओं को भटका कर उन्हें आतंकवाद से जोड़ लिया था और वे अराजकता फैलाने और सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी कर रहे थे। अब प्रशासन की सख्ती से इसमें कमी आई है, लेकिन इस पर पूरी तरह काबू पाना अभी शेष है, ताकि वहां के लोगों को मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

जम्मू कश्मीर राज्य भारत का अभिन्न अंग है। वहां होने वाली शांति का असर पूरे देश पर पड़ेगा। जरूरत अभी फूंक-फूंक कर कदम रखने की है। इसके लिए जरूरी है कि देश के साथ-साथ जम्मू कश्मीर के सभी राजनीतिक दल भी एक मंच पर आएं और राज्य के विकास व युवाओं की बेहतरी के प्रयासों में सहयोग करें। हालात सुधारने के मद्देनजर सरकार ने अब जम्मू कश्मीर में सेना के जवानों या सुरक्षाबलों पर पत्थर फेंकने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की घोषणा की है। अब अगर वहां कोई पत्थरबाजी करता पकड़ा जाएगा, तो उसे पासपोर्ट नहीं मिल सकेगा। इससे पहले केन्द्र सरकार एक कानून में संशोधन कर सरकारी नौकरी के लिए सीआइडी की ओर से अनापत्ति प्रमाण पत्र को जरूरी बना चुकी है। इससे युवाओं को यह स्पष्ट संदेश कि अगर अपने भविष्य को अंधेरे में नहीं जाने देना है तो वे स्थानीय स्तर पर भड़काने वाले या फिर आतंकवाद का पोषण करने वाले लोगों के चंगुल से खुद को आजाद करें या फिर पासपोर्ट और नौकरी से वंचित होकर लाचार जीवन गुजारें।

पत्थरबाजी की सन 2019 में 618 घटनाएं हुई थीं, जबकि उसके बाद 60-70 की घटनाएं सामने आईं। आतंकी हमलों में कमी आई है लेकिन अभी यह स्थिति नहीं है कि देश के अनेक भागों में अपनी रोजी-रोटी कमा रहे पंडित वापस कश्मीर लौटने के लिए तैयार हो सकें। फिर 370 हटाने का उद्देश्य केवल विस्थापितों की वापसी नहीं था बल्कि वहां के युवाओं को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाना, राज्य में उद्योग लगाना और बाहर के उद्योगपतियों को कश्मीर में पूंजी निवेश के लिए तैयार करना भी मूल उद्देश्य में था।

जम्मू कश्मीर वासियों को बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी आधारभूमि सुविधाएं मुहैया कराने पर तेजी से काम हो रहा है। प्रधानमंत्री रोजगार पैकेज के अंतर्गत कश्मीरी विस्थापितों के लिए रोजगार और आवास की व्यवस्था हो रही है। ई-फाइलिंग के जरिये अर्धवार्षिक 'दरबार मूव' की खर्चीली कवायद को समाप्त किया गया है। विभिन्न कार्यों को समयबद्ध निपटाने और समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए सिटीजंस चार्टर लागू किया गया है। इससे निष्क्रिय और टालू सरकारी कर्मी हरकत में आ रहे हैं। रोशनी एक्ट और शस्त्र लाइसेंस घोटाले में धर-पकड़ हो रही है।

जस्टिस रंजन प्रकाश देसाई की अध्यक्षता में गठित परिसीमन आयोग द्वारा विधानसभा क्षेत्रों का परिसीमन करके उन्हें संतुलित और न्यायसंगत बनाया जा रहा है। अच्छी बात यह है कि पहले इस आयोग का बहिष्कार करने वाले नेशनल कांफ्रेंस जैसे दल भी इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेकर इसे समग्र और समावेशी बना रहे हैं। एक विधान, एक निशान, सबको समता और सम्मान न सिर्फ जम्मू कश्मीर के संदर्भ में देश के नीति नियंताओं का पाथेय बने, बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष के संदर्भ में इसे अमली जामा पहनाने की आवश्यकता है। गुलाम कश्मीर भी इसका अपवाद नहीं है। पाकिस्तानी फौज द्वारा वहां के लोगों पर ढाए जा रहे जुल्मो-सितम से निकलने वाली करूण पुकार को लम्बे समय तक अनसुना नहीं किया जा सकता है।

अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद गृहमंत्री अमित शाह और जम्मू कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा के बीच लम्बी बैठक हुई है, जिसमें सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने के साथ ही विकास योजनाओं को गति देने और कट्टरपंथी ताकतों पर लगाम लगाने पर विस्तार से चर्चा हुई। अफगानिस्तान में तालिबान के आने से जम्मू कश्मीर में सुरक्षा हालात पर फिलहाल कोई असर पड़ने की आशंका नहीं है, लेकिन भविष्य को लेकर पहले से तैयारी जरूरी है। जम्मू कश्मीर में तालिबान का हस्तक्षेप कभी नहीं रहा, परंतु अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद सीमा पार बैठे आतंकी आकाओं का दुस्साहस बढ़ने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। तालिबान पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसी आईएसआई की कठपुतली है।

पाकिस्तान उसके सहारे कश्मीर में आतंकी गतिविधियों को हवा देने की कोशिश कर सकता है। इसके लिए सुरक्षा एजेंसियों और स्थानीय पुलिस तंत्र को अत्यधिक चौकन्ना रहने और खुफिया सूचनाओं के तत्काल आदान-प्रदान और उस पर कार्रवाई सुनिश्चित करने को कहा गया है।

अगस्त के अंतिम और सितम्बर के प्रथम सप्ताह में लोकसभाध्यक्ष ओम बिरला ने लद्दाख व जम्मू कश्मीर का व्यापक दौरा किया। उनका इन दोनों राज्यों में भव्य स्वागत हुआ। प्रदेशवासियों ने उन्हें केन्द्र द्वारा तोहफे में दी गई 'नई सुबह' के लिए धन्यवाद दिया।

अंतरिक्ष

शनि के चंद्रमा पर जीवन की तलाश

2030 में रोवरक्राफ्ट जाएगा शनि के टाइटन पर ड्रैगन फ्लाई के तहत

13 साल से शनि के चक्कर काट रहा है अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी का 'कैसिनी'

शनि ग्रह के चन्द्रमा टाइटन के लिए अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने ड्रैगन फ्लाई अभियान भेजने का फैसला किया है। नासा के इस अभियान के वैज्ञानिक लक्ष्यों की घोषणा भी कर दी गई है। गौरतलब है कि हमारे सौरमंडल में मौजूद सभी ग्रहों में से शनि के सबसे ज्यादा चंद्रमा हैं और सौरमंडल के सभी चंद्रमाओं में शनि का टाइटन सबसे अलग पिंड है। यह इकलौता ऐसा चंद्रमा है जहां वायुमंडल भी है और उसकी सतह पर तरलता भी पाई जाती है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यहां पर पानी की नहीं बल्कि मीथेन की बारिश होती है। इतना ही नहीं यहां की जलवायु भी पृथ्वी के समान ही बताई जाती है।

पहले चरण में जाएगा रोवरक्राफ्ट

इतनी जानकारी के बावजूद अभी भी यहां जीवन की मौजूदगी के संबंध में कई बड़े सवाल हैं। अब नासा ने इस सवालों के जवाब तलाशने का मन बना लिया है और इसके लिए अभियान भेजने की घोषणा कर दी है। ड्रैगन फ्लाई अभियान के अंतर्गत साल 2030 तक एक रोवरक्राफ्ट भेजा जाएगा, जो टाइटन की सतह का मुआयना करेगा। नासा ने प्लेनेटरी साइंस जर्नल में इस संबंध में एक शोधपत्र प्रकाशित किया है।

नासा ने ये लक्ष्य किए निर्धारित

लक्ष्यों में रासायनिक जैव संकेतों का अनुसंधान, टाइटन के मीथेन चक्र, वहां के वायुमंडल का अध्ययन, जीवन की शुरुआत के पूर्व का रसायन विज्ञान का अध्ययन शामिल है। शोधपत्र के सह लेखक एलेकस हेस का कहना है कि जिन सवालों के जवाब खोजे जा रहे हैं वे बहुत विस्तृत हैं, क्योंकि हमें जरा भी अंदाजा नहीं हैं कि टाइटन की सतह पर आखिर हो क्या रहा है। बता दें कि अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का कैसिनी सैटेलाइट 13 साल से शनि का चक्कर लगा रहा है, लेकिन टाइटन के मीथेन वाले मोटे वायुमंडल के कारण वहां की सतह के पदार्थों के बारे में जानकारी हासिल करना संभव नहीं हो सका है। **(एजेंसी)**

दागी नेताओं पर कोर्ट का कोड़ा

- सांसदों-विधायकों पर दर्ज मामले हाईकोर्ट की अनुमति के बिना वापस नहीं होंगे
- ईडी-सीबीआई द्वारा मामलों की धीमी जांच पर भी कोर्ट सख्त

डॉ. प्रियदर्शी नागदा

देश में दशकों से राजनीति को अपराध मुक्त बनाने को लेकर विमर्श जारी है। बढ़ते जन-दबावों और न्यायिक सख्ती को देखते हुए कुछ कानून भी बने। सजायाफ्ता लोगों को चुनावी राजनीति से तय अवधि के लिए बाहर करने के विधान ने कुछ सांसदों-विधायकों के लिए सत्ता-सदनों के पट बंद भी किए। लेकिन राजनीतिक दलों के चरित्र में इससे कोई गुणात्मक बदलाव नहीं आया। उल्टे कुर्सी से वंचित हुए चंद जन-प्रतिनिधियों के मुकाबले संसद और विधानसभाओं में दागी लोगों की आमद पहले से बढ़ गई। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के मुताबिक, मौजूदा लोकसभा में ही 43 प्रतिशत सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। दागी सांसदों और विधायकों के खिलाफ कड़ी निगरानी और निर्देश दिए जाने के बावजूद सांसदों और विधायकों के खिलाफ लम्बित मामलों की संख्या में वृद्धि हुई है। दिसम्बर 2018 में ऐसे मामलों की संख्या 4,122 थी जो सितम्बर 2020 में 4,859 हो गई। यह कोई सुखद तस्वीर नहीं है और इसके लिए किसी एक पार्टी या नेता को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। तमाम राजनीतिक दलों ने अपनी कथनी और करनी के फर्क से इस समस्या को गंभीर बनाया है। आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के राजनीति में बढ़ते हस्तक्षेप पर अंकुश के रूप में सर्वोच्च न्यायालय ने 10 अगस्त 2021 को दो बड़े सख्त आदेश दिए हैं। जिसमें अपने पूर्व के दिशा-निर्देशों में भी उसने संशोधन किया है।

हम जांच एजेंसियों का मनोबल गिराना नहीं चाहते हैं। उन पर न्यायाधीशों की तरह अधिक बोझ है। इसलिए हम संयम बरत रहे हैं, लेकिन रिपोर्ट बहुत कुछ कहती है।

—सुप्रीम कोर्ट

सिर्फ संपत्तियां कुर्क की

कोर्ट ने यह भी कहा कि कई धनशोधन मामलों में ईडी ने संपत्तियों को कुर्क करने के अलावा कुछ नहीं किया। चार्जशीट दाखिल किए बिना करोड़ों रुपए की संपत्तियों को कुर्क करने से कोई उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

43%

सांसदों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के मुताबिक, मौजूदा लोकसभा में ही

पिछले साल 20 फरवरी को अदालत ने कहा था कि राजनीतिक दलों को अखबारों में छपवा कर और अपनी वेबसाइट के होमपेज, ट्विटर हैंडल और अन्य संबंधित मंचों पर यह स्पष्टीकरण देना होगा कि उन्होंने आपराधिक पृष्ठभूमि वाले कितने लोगों को टिकट दिया और क्यों दिया है। उन्हें हर उम्मीदवार का आपराधिक ब्योरा देते हुए यह भी बताना होगा कि उन्हें चुनाव लड़ाना क्यों उचित समझा। क्या उससे बेहतर उन्हें कोई उम्मीदवार नहीं मिला। जाहिर है, यह आदेश राजनीतिक दलों को असहज करने वाला था और कयास लगाए जा रहे थे कि वे इसकी अनदेखी करेंगे। वही हुआ। बिहार विधानसभा चुनाव में लगभग सभी दलों ने अपने प्रत्याशियों के आपराधिक विवरण नहीं दिए। इसे सर्वोच्च न्यायालय ने अवमानना करार देते हुए आठ राजनीतिक दलों पर भारी जुर्माना लगाया है। एनसीपी-सीपीएम पर पांच-पांच लाख जबकि भाजपा, कांग्रेस, जेडीयू, जनता दल, राजद, सीपीआई, लोजपा

पर एक-एक लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया है। जस्टिस आरएफ नारीमन की पीठ ने बृजेशसिंह की अर्जी पर यह आदेश दिया। आरोप था कि 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में सियासी दलों ने खानापूर्ति की और आदेश का पालन नहीं किया। इसके अलावा अदालत ने दूसरा फैसला यह सुनाया कि अब कोई भी राज्य सरकार किसी प्रतिनिधि के खिलाफ चल रहा कोई भी आपराधिक मुकदमा बिना उच्च न्यायालय की अनुमति के खुद वापस नहीं ले सकती। ये दोनों फैसले देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में मील का पत्थर साबित हो सकते हैं, अगर इन पर कड़ाई से अमल हो। सुप्रीम कोर्ट ने इसी क्रम में 25 अगस्त को सांसदों और विधायकों के खिलाफ ईडी-सीबीआई द्वारा मामलों की जांच और सुनवाई की धीमी रफ्तार पर भी सख्त रूख अपनाया। मुख्य न्यायाधीश एनवी रमण, न्यायमूर्ति डीवाई चन्द्रचूड़ तथा न्यायमूर्ति सूर्यकांत की पीठ ने कहा की जांच एजेंसियों की स्थिति रिपोर्ट अनिर्णायक है। इसमें 10-15 साल तक चार्जशीट दाखिल

लंबित मामले

पूर्व सांसदों सहित 51 सांसद धनशोधन मामले में आरोपी हैं। 28 मामलों की अभी भी जांच चल रही है। केस आठ से दस साल तक के हैं। लम्बित सीबीआई मामलों में 58 को मौत या आजीवन कारावास की सजा है। सबसे पुराना मामला 2010 से पहले का है। सीबीआई के 37 मामलों की जांच चल रही है।

दुर्भावनापूर्ण मामले में हाईकोर्ट से इजाजत लें

कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकारों को दुर्भावनापूर्ण आपराधिक मामलों को वापस लेने का अधिकार है और वह ऐसे मामलों को वापस लिए जाने के खिलाफ नहीं है, लेकिन इसे हाईकोर्ट की अनुमति से ही वापस लिया जाना चाहिए।

एक अलग प्रकोष्ठ बनाने का निर्देश

चुनाव आयोग को अदालत ने एक अलग प्रकोष्ठ बनाने की भी हिदायत दी है। जिसका काम अदालती आदेश के पालन की निगरानी करना होगा। इससे किसी भी राजनीतिक दल द्वारा अदालती आदेश में दिए गए निर्देशों का पालन नहीं करने के बारे में अदालत को तत्काल जानकारी मिल जाएगी। अदालत ने स्पष्ट किया है कि उसके 13 फरवरी 2020 के आदेश के पैरा 4.4 में दिया गया निर्देश संशोधित समझा जाए। जो विवरण प्रकाशित करना आवश्यक हो, उसका प्रकाशन नामांकन की पहली तिथि से दो हफ्ते पूर्व नहीं बल्कि उम्मीदवार के चयन के 48 घंटे के भीतर करना जरूरी होगा।

नहीं करने का कारण नहीं बताया गया है। ईडी या सीबीआई सुनिश्चित करें कि सुनवाई जल्दी पूरी हो। अदालतों में 200 से अधिक मामले हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Kailash Agarwal
9414159130

Pankaj Agarwal
9414621211

YUVRAJ PAPERS

Yuvraj Papers

Papers | Printing | Stationery

11-A, Indira Bazar, Nada Khada, Near Bapu Bazar,
Udaipur - 313001 Phone :- + 91-294-2418586

email : info@yuvrajpapers.com

वन धन से वंचित वनवासी

विष्णु शर्मा हितैषी

भारत का आदिवासी समाज अस्तित्व की चिंता को लेकर परेशान है। आदिकाल से यह समाज प्रकृति प्रेमी होकर उसी पर निर्भर रहता आया है। वैदिक ऋचाओं में जिन पंचतत्वों जल, जमीन, वायु, अग्नि और आकाश की चर्चा है, उसका पूजक है यह समाज। हमारे जंगल करोड़ों आदिवासियों की आजीविका के प्रमुख साधन हैं।

कहीं विकास के नाम पर तो कहीं भूमाफियाओं द्वारा इस वर्ग को लगातार सताया जाकर बेदखल किया जा रहा है। जैसे-जैसे जंगल सिकुड़ रहे हैं, वनवासियों की आजीविका तो संकट में पड़ ही रही है, वन्य प्राणियों की जान भी आफत में है। वन, पहाड़ नदी सब खत्म हो रहे हैं। पृथ्वी के गर्भ में खनिज सम्पदा के अत्यधिक दोहन के लालच ने पहाड़ियों का सीना चाक कर दिया है। अनियोजित विकास और नीति-नियामकों की अनदेखी से वन उजड़ रहे हैं, नदियों और तालाबों के पेटे पाटे जा रहे हैं। संविधान प्रदत्त संरक्षण के बावजूद धनबल और बाहुबल आदिवासी को जमीन से बेदखल कर उसकी मर्यादाओं व परम्पराओं को नष्ट करने से बाज नहीं आ रहा। परम्परागत ज्ञान और पूर्वजों से हासिल हुनर के बल पर ही वनवासी वनौपज अथवा खेती के जरिये आजीविका चलाता है। लेकिन वनौपज पर भी तस्करों का शिकंजा है। जहां तक भूमिहीनता का सवाल है, तो सबसे पहले यह जांच ज़रूरी है कि वे भूमिहीन हुए कैसे? कहां गई उनकी जमीन? यदि किसी व्यक्ति, संगठन या सरकार ने उन पर कब्जा किया है, तो वह हर हाल में पुन: उन्हें हस्तगत की जाए।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि विकास वही सही है, जिसमें मानव का कल्याण निहित हो। इस मामले में पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद अथवा अन्य किसी वाद से वे कभी सहमत नहीं हुए। उनका 'सर्वोदय' में सदैव यकीन रहा।

गांधीजी के सिद्धान्त और आदर्श सर्व कालिक हैं और मौजूदा दौर में उनकी उपयोगिता पर सवाल उठाने वाले केवल पाखंडी ही हो सकते हैं। गांधीजी के आर्थिक चिंतन के केन्द्र में हमेशा गांव और गरीब रहा। उन्होंने गरीब, किसान, आदिवासी, दस्तकार और मज़दूर के आर्थिक स्तर में सुधार को ही स्वराज की सार्थकता बताया। कई राज्यों में विभिन्न कारणों से विस्थापित आदिवासी आजीविका के लिए शहरों की ओर रूख कर रहे हैं, वहां भी उनके सामने रोजगार और पहचान बनाए रखने की समस्या है। छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, तेलंगाना, बिहार, राजस्थान और पूर्वोत्तर राज्यों में कमोबेश इस समस्या के साथ जंगल-जमीन पर अधिकार की मांग मुखर है। राजस्थान के दक्षिणांचल आदिवासियों की यह मांग पुरानी है और वे आज भी धरना, प्रदर्शन के जरिये शासन को इसकी याद दिलाते हैं। सन् 2006 में केन्द्र सरकार ने यह मान लिया था कि जंगल आदिवासियों के हैं। यानी जंगलों पर पहला अधिकार उनमें बसने वालों का ही है। तभी वनौपजों के संग्रहण और उनसे सम्बद्ध आजीविका मामलों पर कानून बना और अनुसूचित जनजातियों और अन्य वनवासियों के वन्य संसाधनों पर मौलिक अधिकारों की पुष्टि की गई। आज 15 वर्ष व्यतीत होने पर भी वन और उसकी लघु उपज पर अधिकार का वनवासी का सपना अधूरा है। लघु वनौपज मुख्यत: फूल, फल, बीज, छाल, जड़ और घास है। इनमें औषधीय गुणों वाले उत्पाद जड़ी-बूटियां, शहद, चिरौंजी, महुआ, तेंदुपत्ता, कुन्नू, धावड़ा, खैर, साल, हर्रा, बबूल, गोंद, लाख आदि भी शामिल है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय के अन्तर्गत भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास परिसंघ(ट्राईफेड) वनवासी लोगों के लिए रोजगार सृजन और आय में वृद्धि के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कर रहा है, इसमें वन धन जनजातीय उद्यमिता एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जिसमें एक विशेष प्रकल्प

है – 'मैकेनिज्म फॉर मार्केटिंग ऑफ माइनर फॉरेस्ट प्रोडयूस(एमएफपी) अर्थात् लघु वनौपजों के विपणन का एक तंत्र।

केन्द्र सरकार ने अक्टूबर 2019 में वन धन विकास योजना प्रारंभ की ताकि वन क्षेत्रों में विकास केन्द्र स्थापित किए जाकर जनजातीय नवउद्यमियों को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहन व मदद मिल सके। पिछले दो वर्षों में 34 हजार से अधिक वन धन विकास केन्द्र खोले गए हैं, जिसका व्यापक लाभ मिलने का दावा भी किया जा रहा है, लेकिन जब तक आदिवासियों को उनकी भूमि का हक़ सुनिश्चित नहीं किया जाता, वनों को सिकुड़ने से नहीं रोका जाता और खनिज दोहन के लिए भूमाफियाओं की घुसपैठ नहीं रोकी जाती तब तक उनकी शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक स्थिति में सन्तोषजनक सुधार की वह संभावना दिखाई नहीं देती, जिसकी उन्हें वर्षों से तलाश है।

आदिवासी मूल रूप से संकुचित स्वभाव के हैं। जिसके चलते ये अन्य वर्गों के साथ पूरी तरह घुल-मिल नहीं पाते। बाहरी लोगों से उनका तालमेल नहीं बैठ पाता। ऐसे संकोची स्वभाव के वर्ग के लिए उसके अनुकूल अनौपचारिक व औपचारिक विशेष शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। सरकारों, राजनैतिक दलों, आदिवासी उत्थान से सम्बन्धित स्वयंसेवी संगठनों व आदिवासी मुखियाओं को वास्तव में इस वर्ग का हित साधना ही है तो उनकी प्रगति के अवरोधकों की बारीकी से पहचान कर उन्हें दूर करना होगा। उनकी सांस्कृतिक परम्पराओं व मान्यताओं को ठेस पहुंचे, ऐसा कोई भी कार्य उन्हें कतई स्वीकार्य नहीं होगा।पिछले डेढ़ साल में कोरोना महामारी से उत्पन्न हालात में आर्थिक मोर्चे पर इस वर्ग को अपेक्षाकृत व्यापक हानि से रूबरू होना पड़ा है। परिणामत: जीवन स्तर से समझौतों ने स्वास्थ्य सम्बन्धी कई समस्याएं खड़ी कर दीं। पुरूषों के मुकाबले महिलाओं का स्वास्थ्य बुरी तरह प्रभावित हुआ। पश्चिम बंगाल और उसके आसपास के जनजातीय इलाकों की स्वास्थ्य संबंधी रिपोर्ट से पता चलता है कि 64 प्रतिशत से अधिक महिलाओं में बीएमआई 18.5 प्रति. से भी कम है। झारखंड के जनजातीय क्षेत्रों में 73 फीसद औसत के मुकाबले 82 प्रति. महिलाएं रक्ताल्पता और उससे उत्पन्न बीमारियों से जूझ रही हैं। उन्हें उपचार और परामर्श की बेहद आवश्यकता है। गर्भवती महिलाओं और शिशुओं के स्वास्थ्य की जाँच और पोषाहार पर ध्यान देना जरूरी है। चिकित्सा संसाधनों के विस्तार के बिना यह संभव नहीं है।

राजस्थान में आरयूडीएफ को फिर मंजूरी

जयपुर। तंगहाली से जूझते निकायों को विकास कार्यों के लिए वित्तीय सहायता मुहैया करवाई जाएगी। इसके लिए अशोक गहलोत सरकार ने फिर से राजस्थान अर्बन डवलपमेंट फंड (आरयूडीएफ) गठन को मंजूरी प्रदान की है। मुख्यमंत्री गहलोत ने अपने पिछले कार्यकाल में भी यह फंड शुरू किया था, लेकिन उसके बाद की भाजपा सरकार ने इस पर रोक लगा दी थी। प्रदेश के नगरीय निकायों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं नगरीय क्षेत्रों में विकास कार्यों को गति देने के लिए गठित राजस्थान शहरी विकास निधि राज्य के कमजोर नगरीय निकायों को अपने आधारभूत ढांचे को मजबूत करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा सकेगी।

पिछली बार था 4000 करोड़ का फंड

कांग्रेस की गहलोत सरकार के पिछले कार्यकाल में आरयूडीएफ का गठन किया गया था, जिसमें करीब चार हजार करोड़ का वित्तीय प्रावधान था। इस फंड से सी–श्रेणी निकायों को विकास कार्यों के लिए वित्तीय सहायता मुहैया करवाई गई थी। इस बार भी इस फंड में करीब एक हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है, जिसे बाद में बढ़ाया भी जा सकेगा।

इन कामों के लिए मिलेगा पैसा

इस फंड के माध्यम से निकायों को केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं, एनजीटी के मापदण्डों को पूरा करने के लिए वित्तीय संसाधन उपलब्ध करवाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त अमृत योजना, स्मार्ट सिटी मिशन आदि में नगरीय निकायों की ओर से वहन की जाने वाली हिस्सा राशि की पूर्ति भी इससे की जा सकेगी।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992, 94140 77697

'बाहुबली' के राजमौली की 'आरआरआर' दोहरा पाएगी सफलता?

रमेश गोस्वामी

बाहुबली और बाहुबली-2 भारतीय सिनेमा की टिकट खिड़की पर उठी ऐसी आंधी थी, जिसने बॉलीवुड की चमक फीकी कर दी थी। दुनिया भर में 1800 करोड़ रुपए का कारोबार करने वाली बाहुबली-2 के सामने मुंबइया फिल्म जगत की एकमात्र फिल्म दंगल ही टिक सकी।

हालांकि दो भागों में बनी बाहुबली (पहले भाग ने 650 और दूसरे भाग ने 1810 करोड़ का कारोबार किया) के निर्देशक अदभुत कल्पना शक्ति वाले राजमौली की ताजा फिल्म है, 'आरआरआर' यानी राइज, रोअर, रिवोल्ट'। आरआरआर में तेलुगू फिल्मों के सुपर स्टार जूनियर एनटीआर और रामचरण हैं। चार सौ करोड़ की लागत से बन रही यह फिल्म 13 अक्टूबर को रिलीज हो सकती है। फिल्म जगत की निगाहें इसी फिल्म पर है। फिल्मवाले देखना चाहते हैं कि क्या राजमौली बाहुबली जैसी सफलता फिर दोहरा पाएंगे? राजमौली ने इस फिल्म के चरित्र कैसे दिखेंगे और उनकी चाल ढाल क्या होगी, इसी पर 18 महीने खर्च किए हैं, इसी से समझा जा सकता है कि फिल्म को किस स्तर पर ले जाना चाह रहे हैं।

आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री और तेलुगू फिल्मों के सुपर स्टार रहे दिवंगत नंदमूरि तारक रामाराव यानी एनटीआर के बेटे जूनियर एनटीआर आरआरआर में कोलाराम भीम की भूमिका निभा रहे हैं। आरआरआर 1920 की पृष्ठभूमि पर बन रही है और इसमें अंग्रेजों के खिलाफ बिगुल फूंकने वाली अलूरी सीता रामराजू की कहानी भी जुड़ी है। यह भूमिका रामचरण निभा रहे हैं। फिल्म में अजय देवगन अतिथि भूमिका में नजर आएंगे। निकट आ रही दीपावली को मनोमस्तिष्क में रखते हुए नामीगिरामी निर्माताओं और कलाकारों वाली फिल्मों की पूछपरख बढ़ने लगी हैं। खरीदारों ने फिल्मों के लिए करार करने शुरु कर दिए हैं।

तेलुगू में बनने और हिंदी, तमिल, कन्नड़, मलयालम चार भाषाओं में डब होने वाली आरआरआर (तेलुगू में रूद्रम, रणम, रूधिरम) के सेटेलाइट राइट्स स्टार नेटवर्क

फरहान की 'जी ले जरा'

अभिनेता एवं फिल्मकार फरहान अख्तर ने अदाकारा प्रियंका चोपड़ा जोनस, कैटरीना कैफ और आलिया भट्ट के साथ फिल्म बनाने की पिछले दिनों घोषणा की। इस फिल्म का निर्देशन भी फरहान ही करेंगे, जिसका नाम 'जी ले जरा' होगा। इस फिल्म का निर्माण फरहान और रितेश सिधवानी की निर्माण कम्पनी एक्सेल एंटरटेनमेंट और जोया अख्तर तथा रीमा कागती की 'टाइगर बेबी' के बैनर तले किया जाएगा। फरहान अख्तर (47) ने फिल्म दिल चाहता है के साथ निर्देशन में कदम रखा था और इस फिल्म के 20 साल पूरे होने के मौके पर ही उन्होंने इस नई फिल्म की घोषणा की। फरहान ने कहा कि नई फिल्म की घोषणा के लिए 'दिल चाहता है' के 20 साल पूरा होने से अच्छा अवसर कोई और नहीं हो सकता था।

ने और डिजिटल राइट्स डिजनी + हॉट स्टार ने 200 करोड़ रुपए में खरीदे हैं। बाहुबली और बाहुबली 2 ने हिंदी क्षेत्रों में उतनी कमाई नहीं की थी। इसका ध्यान रखते हुए आरआरआर में हिन्दी फिल्मों के दो लोकप्रिय कलाकारों अजय देवगन और आलिया भट्ट को जोड़ा गया है। अजय देवगन फिल्म में मध्यांतर के बाद नजर आएंगे और उनकी भूमिका 40 मिनट की होगी। हालांकि जिस स्तर पर आरआरआर बनाई जा रही है, संभावना है कि फिल्म का 13 अक्टूबर को होने वाला प्रदर्शन आगे बढ़ जाए। देखना दिलचस्प होगा कि मक्खी और बाहुबली जैसी फिल्में बना चुके राजमौली फिर वैसा ही चमत्कार दिखा पाएंगे या नहीं ?

आदित्य की 'पृथ्वीराज'

आमतौर पर ऐसा हुआ नहीं है कि बॉलीवुड में दीपावली पर किसी ऐसे निर्देशक की फिल्म रिलीज हो, जो मुख्यधारा की हिंदी फिल्मों का निर्देशक नहीं माना गया हो। इस साल अगर दीपावली पर सिनेमाघरों में फिल्में रिलीज होने की स्थिति बनती है तो दर्शकों को चन्द्रप्रकाश द्विवेदी की फिल्म 'पृथ्वीराज' देखने को मिलेगी, जिसके निर्माता आदित्य चोपड़ा हैं। चन्द्रप्रकाश द्विवेदी को दर्शक दूरदर्शन के धारावाहिक चाणक्य (1991) में मुख्य भूमिका निभाते देख चुके हैं। इसके बाद द्विवेदी ने मृत्युंजय तथा एक और महाभारत जैसे धारावाहिक किए। बॉलीवुड में उन्होंने 2003 में बतौर निर्देशक पिंजर बनाई, जिसमें उर्मिला मातोंडकर ने अपनी रंगीला छाप ग्लैमरस छवि के विपरीत भूमिका निभाई थी। विभाजन की पृष्ठभूमि पर अमृता प्रीतम के लिखे उपान्यास पर यह फिल्म बनी थी। अब 18 साल बाद द्विवेदी अपनी फिल्म 'पृथ्वीराज' के साथ बॉलीवुड दीवाली मनाने को तैयार है।

आस्ट्रेलिया के उत्तर में कैनिंग बेसिन की चट्टानों से शोधकर्ताओं ने खोजे सबूत

51 करोड़ साल पहले हुई पौधों की उत्पत्ति

एक नए शोध से पता चलता है कि जमीन पर पौधों का आना 51.5 करोड़ साल पहले हुआ था जबकि प्राचीनतम पौधे के तने के जीवाश्म 43 करोड़ वर्ष पहले मिले थे। मीठे पानी के शैवालों से विकसित होकर पौधे जब पहली बार भूमि पर दिखे थे तो उन्होंने समूची धरती का रंग-रूप पूरी तरह बदल दिया। हवा से कार्बन डाइ ऑक्साइड लेकर उन्होंने धरती को शीतल किया और चट्टानी सतहों को नष्ट कर मिट्टी का निर्माण किया जो अब पूरी भूमि के ज्यादातर हिस्से को ढक कर रखती है।

शोधकर्ताओं ने पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के उत्तर में कैनिंग बेसिन से चट्टानों के नमूनों में जमीनी पौधों के साथ ही प्राचीन जल शैवालों से बीजाणु और 48 करोड़ साल पुराने जीवाश्म बीजाणुओं की खोज की। ये अब तक पाए गए सबसे पुराने जमीनी पौधे के बीजाणु हैं, और ये सुराग देते हैं कि पौधे कब और कहां भूमि पर पहुंचे और यह भी कि वे कैसे जीवित रहने में कामयाब रहे। यह अनुसंधान साइंस पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

प्रस्तुतिः हर्षिता नागदा

कई और गुत्थियों को सुलझाएंगे निष्कर्ष

इस खोज के साथ ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं का कहना है कि हमारे शोध के निष्कर्ष बेहद सकारात्मक हैं और इनसे पौधों की उत्पत्ति के संबंध में कई और गुत्थियों को सुलझाने में भी मदद मिलेगी। शोधकर्ताओं ने कहा कि हम इस दिशा में अपने शोध को और आगे बढ़ा रहे हैं। कैनिंग बेसिन में की गई यह खोज नए रास्ते खोलने का काम करने वाली है।

समुद्री किनारे पर मीठे पानी में विकास हुआ

यह खोज कैनिंग बेसिन में जमीनी पौधों के बीजाणुओं के पहले के अध्ययनों के बाद की है। 1991 में 44-44.5 करोड़ वर्ष पहले के बीजाणु पाए गए थे। 2016 में 46 करोड़ वर्ष पहले के बीजाणु पाए गए थे। पत्थरों के अनुक्रमों की आयु निर्धारित करने के प्रयासों में 100 प्रमुख नमूनों के तत्वों की जांच के बाद ही दो रिकॉर्ड पाए गए, जिससे पता चला कि बीजाणु दुर्लभ हैं। प्रारंभिक जमीनी पौधे, अपने कैरोफाइट शैवाल पूर्वजों की तरह, समुद्र के किनारे पर मीठे पानी में विकसित हुए।

स्वाद से भरपूर अमरूद

सर्दियों में मिलने वाला अमरूद विटामिन और एंटी ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होता है। मधुमेह के रोगियों के लिए तो यह एक वरदान की तरह है। इसे खान-पान में शामिल करते हुए विविध व्यंजनों का स्वाद लें।

पुष्पा शर्मा

बर्फी

सामग्री: पके अमरूद का बीज निकला गूदा–एक किलोग्राम, चीनी पिसी–डेढ किलोग्राम, मक्खन–2 बड़े चम्मच, कटे बादाम–100 ग्राम, घी–एक छोटा चम्मच।

यूं बनाएं: गूदे को मिक्सी में डालकर पेस्ट बना लें। फिर उसे कड़ाही में डालकर हल्की आंच पर भूनें। आधा भुन जाने पर मक्खन, चीनी पिसी और आधे बादाम डालकर भूरा होने पर भूनें। जब मिश्रण कड़ाही छोड़ने लगे, तब चिकनाई लगी ट्रे में पलटकर फैलाएं। ठंडा होने पर बर्फियां काट लें। बादाम रखकर सर्व करें।

फ्रूट बाउल

सामग्री: बड़े आकार के पके हुए अमरूद–2, पके पपीते के छोटे टुकड़े–एक कप, अनार के दाने 1/2 कप, सेब के टुकड़े–1/2 कप, अनानास के छोटे टुकड़े–1/2 कप, चाट मसाला, एक छोटा चम्मच, चेरी–4

यूं बनाएं: अमरूदों को 2/2 भागों में काटकर उनके बीच से बीज और गूदा निकाल लें। फिर इनमें बाकी कटे फलों को मिलाकर भरें। ऊपर से चाट मसाला बुरकें और धनिया पत्ती से सजाकर सर्व करें।

ग्वावा स्टाइल

सामग्री: दूध–एक लीटर, अमरूद एक, चीनी–100 ग्राम, ताजा क्रीम–1/2 कप, कटे बादाम, पिस्ता व पेठा चेरी।

यूं बनाए: अमरूद को कस लें। दूध को भारी पेंदे के तले में उबालें। आधा रह जाने पर आंच से उतार लें। ठंडा होने पर चीनी, कसा अमरूद व ताजा क्रीम मिला लें। थोड़े से कटे बादाम व पिस्ता भी मिला लें। तैयार मिश्रण को कुल्फी के सांचों में भरकर जमने के लिए फ्रीजर में रख दें। जम जाने पर सांचों से निकालकर काटें। कटे बादाम–पिस्ता और पेठा चेरी से सजाकर सर्व करें।

अमरूद सूप

सामग्री: अमरूद–2, रोस्टेड पीनट–1/2 कप, दूध एक कप, मक्खन–एक बड़ा चम्मच, काली मिर्च पाउडर व नमक स्वादानुसार।

यूं बनाएं: अमरूद को बीज निकालकर छोटे टुकडों में काट लें। कटे अमरूद 4 कप पानी में उबाल लें। ठंडा करके मिक्सी में पीस लें। मूंगफली को छीलकर दरदरा पीस लें। पैन में मक्खन पिघलाकर दरदरी मूंगफली भून लें। इसमें ब्लेंड किए अमरूद, नमक, काली मिर्च व दूध डालकर पकाएं। हरा धनिया डालकर गरम–गरम सर्व करें।

ग्वावा–रोज सूदर

सामग्री: अमरूद–एक ग्वावा, जूस एक कप, दूध 250 मिली लीटर, सूखा दूध पाउडर–50 ग्राम, ताजा क्रीम 100 ग्राम, चीनी 200 ग्राम, गुलाबजल एक चम्मच, हरी लाल पेठा चेरी–एक बड़ा चम्मच।

यूं बनाएं: अमरूद को काटकर पीस लें। उसमें दूध, क्रीम, सूखा दूध पाउडर तथा चीनी को मिलाकर अच्छी तरह फेटें। ग्वावा जूस मिलाकर ट्रे में डालें और फ्रीजर में जमने के लिए रख दें। एक घंटे बाद निकालकर खूब फेटें और फिर से फ्रीजर में रखें। दो घंटे बाद निकालकर काटें। चेरी से सजाएं और गुलाबजल छिड़क कर सर्व करें।

हलवा

सामग्री: बड़े आकार के पके अमरूद–एक किलोग्राम, चीनी पिसी–एक किलोग्राम, इलायची पाउडर–एक छोटा चम्मच, घी–2 चम्मच, काजू और किशमिश मनचाही मात्रा में।

यूं बनाएं: अमरूदों को धोकर काट लें। उनके बीज निकाल कर गूदे को मिक्सी में डालें और पेस्ट बना लें। अमरूद के पेस्ट को कड़ाही में डालकर हल्की आंच में भूने। गूदा गाढ़ा होने लगे तो घी डालकर थोड़ा और भूने। जब गूदा कड़ाही छोड़ने लगे, तब पिसी चीनी और इलायची पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। हलवा तैयार है। काजू–किशमिश से सजाकर सर्व करें।

नवरात्रि की शुभकामनाओं सहित

कन्हैयालाल जैन
राकेश जैन (बंटी)

फोन :- 0294-2429053

राजस्थान मेडिकल स्टोर

महाराणा भूपाल राजकीय चिकित्सालय के सामने, उदयपुर

कामराज में था, गजब का राजनैतिक कौशल

उमेश शर्मा

जन्म : 15 जुलाई 1903 निधन : 2 अक्टूबर 1975

तमिलनाडु की राजनीति में बिल्कुल निचले स्तर से राजनैतिक जीवन शुरू कर देश के दो प्रधानमंत्री चुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण किंगमेकर कहे जाने वाले के. कामराज साठ के दशक में कांग्रेस संगठन में सुधार के लिए बनाए गए कामराज प्लान के कारण काफी चर्चित हुए थे।

प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के करीबी और तमिलनाडु के तीन बार मुख्यमंत्री रहे कामराज को कांग्रेस में किंगमेकर के नाम से जाना जाता था। राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में नेहरू ही कामराज को लेकर आए थे। कामराज ने साठ के दशक की शुरूआत में महसूस किया कि कांग्रेस की पकड़ कमजोर होती जा रही है। इस पर उन्होंने नेहरू को एक योजना सुझाई और खुद दो अक्टूबर 1963 को तमिलनाडु के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया।

उन्होंने सुझाया कि पार्टी के बड़े नेता सरकार में अपने पदों से इस्तीफा दे दें और अपनी ऊर्जा संगठन में नई जान फूंकने के लिए लगाएं। अपनी इस योजना के तहत उन्होंने खुद भी इस्तीफा दिया और लाल बहादुर शास्त्री, जगजीवन राम, मोरारजी देसाई और एस के पाटील जैसे नेताओं ने भी सरकारी पद त्याग दिए थे। यही योजना कामराज प्लान के नाम मशहूर हुई। कहा जाता है कि उनके कामराज प्लान की बदौलत वह केन्द्र की राजनीति में इतने मजबूत हो गए कि नेहरू के निधन के बाद शास्त्री और इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बनवाने में उनकी भूमिका किंगमेकर की रही। वह तीन बार कांग्रेस अध्यक्ष भी रहे। दक्षिण भारत की राजनीति में कामराज एक ऐसे नेता भी रहे जिन्हें शिक्षा जैसे क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है। आजादी मिलने के बाद 13 अप्रेल 1954 को कामराज ने इच्छा न होते हुए भी तमिलनाडु का मुख्यमंत्री पद स्वीकार किया। लेकिन प्रदेश को एक ऐसा नेता मिल गया जो उनके लिए कई क्रांतिकारी कदम उठाने वाला था। कामराज ने उनके नेतृत्व को चुनौती देने वाले सी सुब्रमण्यम और एम भक्तवत्सयम को केबिनेट में शामिल कर सबको चौंका दिया था।

कामराज लगातार तीन बार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने प्रदेश की साक्षरता दर बढ़ाकर 37 फीसद तक पहुंचा दी थी। वे एक कद्दावर नेता थे। तमिलनाडु में उनकी नेतृत्व क्षमता और उनके कामों की बराबरी किसी और से नहीं की जा सकती। उन्होंने आजादी के बाद तमिलनाडु में जन्मी पीढ़ी के लिए बुनियादी सरंचना पुख्ता की थी। कामराज ने शिक्षा क्षेत्र के लिए कई अहम फैसले लिए।

उन्होंने यह व्यवस्था की कि कोई भी गांव बिना प्राथमिक स्कूल के न रहे। उन्होंने निरक्षरता हटाने की मुहिम शुरू की और कक्षा 11वीं तक नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी। वे ही स्कूलों में गरीब बच्चों को मध्याह्न भोजन देने की योजना लेकर आए थे। शिक्षा क्षेत्र में बुनियादी काम के अलावा तमिलनाडु को उन्होंने एक और सौगात यह दी थी कि वह स्कूली और उच्च शिक्षा में तमिल भाषा को एक माध्यम के तौर पर लेकर आए। उन्हीं के कार्यकाल के बाद से तमिलनाडु में बच्चे तमिल में शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 को तमिलनाडु के विरूधुनगर में हुआ। मूल नाम कामाक्षी कुमारस्वामी नाडार था, लेकिन बाद में वह के कामराज के नाम से ही जाने गए। कामराज के पिता व्यापारी थे। पिता की असमय मौत ने उनके परिवार को परेशानी में डाल दिया।

कामराज अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए, लेकिन जार्ज जोसेफ के नेतृत्व वाले वैकम सत्याग्रह ने उन्हें आकर्षित किया। महज 16 साल की आयु में कामराज कांग्रेस में शामिल हो गए। आजादी से पहले के अपने राजनीतिक जीवन में कामराज कई बार जेल गए। जेल में रहते हुए ही उन्हें म्युनिसिपल काउंसिल का अध्यक्ष चुना गया। लेकिन रिहाई के नौ महीने बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया और कहा किसी को तब तक कोई पद स्वीकार नहीं करना चाहिए जब तक वह उसके साथ पूरा न्याय न कर सके।

कामराज के राजनीतिक गुरु सत्यमूर्ति थे। उन्होंने कामराज में एक निष्ठावान और कुशल संगठक देखा। कामराज में गजब का राजनीतिक कौशल था। बेदाग छवि वाले इस नेता ने हमेशा पड़ोसी राज्यों के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध बनाए। कांग्रेस के घटते जनाधार और राज्यों के बीच मौजूदा जल व सीमा विवाद को देखते हुए उनके जैसे नेता की जरुरत आज शिद्दत से महसूस की जा रही है। दो अक्टूबर1975 को कामराज का निधन हुआ। उन्हें 1976 में मरणोपरांत भारत रत्न से नवाजा गया।

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

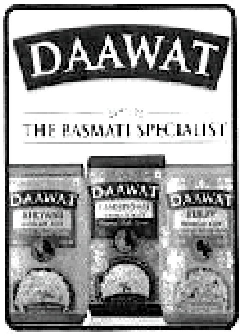

94141-60671 (Sirumal)
94141-57343 (Dilip)
94141-62036 (Lakhmichand)
99503-00412 (Lakhmichand)

POPULAR ब्राण्ड

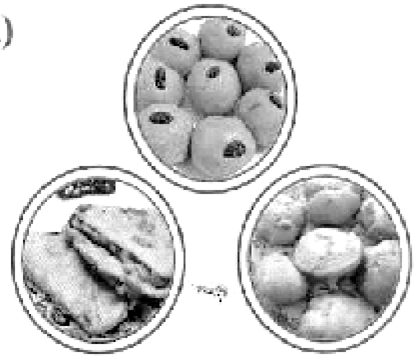

दलिया, बेसन, बाटी–आटा के निर्माता

MP का आदित्य आटा एवं पापुलर ब्राण्ड हलवाई स्पे. मैदा उपलब्ध है

मोहन ट्रेडिंग कम्पनी

अधिकृत विक्रेता : दावत बासमती चावल

हर प्रकार के चावल, दालें, मैदा, सूजी, बेसन, पौहा के होलसेल व्यापारी

153, कृषि उपज मण्डी यार्ड, उदयपुर (राज.) Phone : 0294-2483671, 2464036 (R)

प्लांट : जी–1, 414, सिक्योर मीटर के पीछे, कैम्बे होटल के पहले वाली गली, भामाशाह इण्ड. एरिया, कलड़वास, उदयपुर (राज.)

Hotel
Raj Shree Palace

The Royal & Luxury Stay

Opp. Garden Hotel, Gulab Bagh Road, Udaipur - 313001, Ph. : 0294-6505060
E-mail : hotelrajshreepalaceudr@gmail.com, Website : www.hotelrajshreepalace.com

इस माह आपके सितारे

मेष

कार्य के प्रति उत्साह में कमी, बड़े भाई-बहनों के सहयोग से बिगड़े कार्यों में सुधार होगा, संतान पर व्यय, अधिक उत्तेजना से हानि की संभावना रहेगी। क्रोध पर नियंत्रण रखें, स्थान परिवर्तन एव दूर की यात्राएं संभव। स्वास्थ्य के प्रति सजगता आवश्यक।

वृषभ

सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। व्यय की अधिकता, विद्यार्थियों के लिए श्रेष्ठ समय। वाहन से कष्ट, मित्रों का विरोध हो सकता है। व्यापार की गति मंद रहेगी। पत्नी और संतान सुख पर्याप्त मिलेगा। माह के उत्तरार्द्ध में शत्रु बाधाओं का शमन होगा, मन को स्थिर रखें।

मिथुन

स्वहितों की रक्षा होगी, लेकिन आस-पड़ोस से विवाद संभव, व्यापार मध्यम, लाभ की कमी और दाम्पत्य जीवन में अनबन एवं द्वेष उत्पन्न हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त होगी। मासांत उत्तम रहेगा। किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

कर्क

मौजूदा परिस्थितियों में सुधार होगा। व्यापारिक लाभ और संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। जागरूकता व चैतन्यता बढ़ेगी, वाहन से दुर्घटना की संभावना है, अतः सावधानी बरतें। ऋण की चिंता रहेगी। घर-गृहस्थी में खुशी व प्रसन्नता। यशस्वी कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा।

सिंह

श्रम साधना से कामनाएं पूर्ण होगी, लेखन-अध्यापन से तरक्की होगी, मानसिक तनाव दूर होगे। संकल्पित मनोरथ पूर्ण होंगे। पारिवारिक उलझनें दूर होंगी, यात्राएं सफल व लाभकारी होंगी, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। पैतृक मामलों में लाभ की संभावना होगी

कन्या

व्यवसाय पक्ष भाग्यानुकूल होगा। बिगड़े कार्य बनेंगे। अकारण लोगों से विरोध हो सकता है। पति-पत्नी से अनबन एवं विरोध रह सकता है। संतान पक्ष चिंता का कारण बन सकता है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी वर्ग को लाभ मिलेगा, अकारण क्रोध न करें। संयम रखें।

तुला

विरोधी बाधाएं उत्पन्न कर सकते हैं। धन, यश, कीर्ति का विस्तार होगा। बड़े-बुजुर्गों से मतभेद होंगे। लेखन कार्य में सफलता, व्यापारिक गतिविधियां उत्तम रहेगी। नौकरी में स्थानांतरण के योग बनेंगे। माह के पूर्वार्द्ध में भौतिक सुखों में कमी रहेगी।

पं. शोभालाल शर्मा

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
2 अक्टूबर	आश्विन कृष्ण एकादशी	महात्मा गांधी/लाल बहादुर शास्त्री जयंती
7 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा	नवरात्रि घटस्थापना/अग्रसेन जयंती
9 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल तृतीय-चतुर्थी	गुरु रामदास जयंती
13 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल अष्टमी	दुर्गाष्टमी
15 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल दशमी	विजयादशमी
20 अक्टूबर	आश्विन शुक्ल पूर्णिमा	शरद पूर्णिमा
21 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा	गुरु गोविंदसिंह पुण्य दिवस
24 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी	करवा चौथ बलिदान
31 अक्टूबर	कार्तिक कृष्ण दशमी	इंदिरा गांधी बलिदान दिवस

वृश्चिक

भाग्य में वृद्धि, मान-सम्मान एवं शासकीय लाभ मिलेंगे। अकारण धन एवं पुण्य की हानि, व्यवहार में कलुषित वातावरण का सामना करना होगा। चिंता-व्यथा से मन दुःखी होगा। जुआ-सट्टा तथा अनैतिक धन से हानि व प्रतिष्ठा दागदार हो सकती है।

धनु

राजकीय, शासकीय एवं न्यायलयिक कार्यों में सफलता मिलेगी, स्थान और पद से परिवर्तन संभव। विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। आय पक्ष मध्यम। किसी वरिष्ठजन या प्रबुद्धजन का मार्गदर्शन व सहयोग मिलेगा।

मकर

11 अक्टूबर से परिस्थितियों में सुधार होगा। बाधाएं दूर होंगी। यश की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। दौड़-धूप की अधिकता रहेगी। स्थानांतरण के योग, अपने पुरुषार्थ से सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। माता-पिता का पूर्ण सहयोग रहेगा। संतान पक्ष से चिंता।

कुम्भ

साहस में वृद्धि, जीवन में व्यस्तता रहेगी। गुप्त शत्रु का भय और भाइयों से द्वेष का योग बनेगा। पूर्व में निवेशित धन लाभ देगा, वाद-विवाद में सफलता। मातुल पक्ष को कष्ट, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। स्थान परिवर्तन संभव, कार्य क्षेत्र में बाधाएं पैदा होंगी।

मीन

पारिवारिक उत्तरदायित्व की वृद्धि, जुआ-सट्टा, लॉटरी द्वारा हानि के पूर्ण योग, व्यापार एवं कर्म क्षेत्र में वृद्धि होगी। आय के नये स्रोत बनेंगे। सोने में निवेश से लाभ रहेगा। शत्रुओं पर विजय और आरोग्यता बनी रहेगी। संतान पक्ष श्रेयस्कर है।

नाथद्वारा में हिंदी प्रसार महाकुंभ

नाथद्वारा। साहित्य मंडल द्वारा त्रिदिवसीय (14,15 व 16 सितम्बर) हिंदी लाओ-देश बचाओ समारोह विभिन्न सत्रों में संपन्न हुआ। समारोह के तहत 14 सितम्बर को हिंदी प्रसार प्रभातफेरी, पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी, हिंदी उपनिषद, हिंदी लेखकों-कवियों का सम्मान आदि कार्यक्रम हुए।

समारोह के प्रारंभ में साहित्य मंडल के संस्थापक हिंदीसेवी स्व. भगवती प्रसाद देवपुरा को भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। संस्थान के प्रधानमंत्री श्यामप्रकाश देवपुरा ने बताया कि 15 सितम्बर को हिंदी उपनिषद, हिंदी हुंकृति, हिंदी काव्यभूषण एवं सम्पादक रत्न सम्मान तथा संस्थान त्रैमासिक पत्रिका हरसिंगार के विशेषांक का विमोचन हुआ। 16 सितम्बर को समारोह का समापन हिंदी साहित्य भूषण, हिंदी काव्याभूषण व हिंदी साहित्य शिरोमणि सम्मान प्रदान करने के साथ हुआ। प्रधानमंत्री देवपुरा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए मंडल की 1937 से अब तक की हिंदी सेवायात्रा पर प्रकाश डाला।

इस आयोजन में देश के विभिन्न भागों से विद्वानों, कवियों और हिंदी सेवी सम्पादकों ने भाग लिया। विद्वानों का स्वागत मंडल के अध्यक्ष नरहरि ठाकर ने किया। प्रद्युम्न प्रकाश व अनिरुद्ध देवपुरा का विशेष सहयोग रहा। संचालन श्यामप्रकाश देवपुरा, विट्ठल पारीक व हरिओम ने किया।

महिला समृद्धि बैंक को सर्वश्रेष्ठ महिला बैंक अवार्ड

उदयपुर। दी उदयपुर महिला समृद्धि अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड को सहकारिता क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ महिला नागरिक सहकारी बैंक का अवार्ड मिला है। बैंक अध्यक्ष विद्या किरण अग्रवाल ने बताया कि बंको पूना की ओर से मैसूर में हुए बंको ब्ल्यू रिबन अवार्ड में मुख्य अतिथि मैसूर के युवा सांसद प्रतापसिंह ने बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी विनोद चपलोत एवं आईटी हेड निपुण चित्तौड़ा को यह सम्मान प्रदान किया। चपलोत ने बताया कि इस वर्ष देश की 450 से अधिक नागरिक सहकारी बैंकों ने इस अवार्ड हेतु आवेदन किया था।

जे.के. सीमेंट वर्क्स द्वारा नि:शुल्क कोचिंग

निम्बाहेड़ा। जे.के. सीमेंट वर्क्स द्वारा सामाजिक सेवा प्रकल्पों के तहत कैलाशनगर-02 में चलाई जा रही नि:शुक्ल कोचिंग क्लासेस द्वारा श्रमिकों के परिवारजनों को विविध पदों के लिए राजकीय प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता दिलाने हेतु सेंटर चलाया जा रहा है। प्रबंधक शैलेश चौबीसा ने बताया कि जे. के. सीमेंट की ओर से एकलव्य शिक्षण संस्थान के सहयोग से संचालित कोचिंग सेंटरों पर क्षेत्र के 45 से अधिक शिक्षित युवाओं व युवतियों को विविध पदों की भर्तियों के लिए नि:शुल्क प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार देने का प्रयास किया जा रहा है।

तीरंदाजी एकेडमी की स्थापना होगी

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक लि. खेलों के विकास और बच्चों में प्रतिभा विकास के लिए प्रतिबद्ध है। यह बात पिछले दिनों कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण मिश्रा ने कही। उन्होंने कहा खेल व शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण प्रतिभाओं को तराशने का हर संभव उपाय किया जा रहा है। इन्हीं प्रयासों के चलते जावर में फुटबाल एकेडमी की स्थापना के बाद जिंक की फुटबाल टीम चैम्पियन बनकर उभरी है। हिन्दुस्तान जिंक जल्दी ही उदयपुर में तीरंदाजी प्रशिक्षण के लिए अकादमी की स्थापना करेगा।

प्रो. व्यास जेएनवीयू जोधपुर में सिंडिकेट मेंबर नियुक्त

उदयपुर. राज्य सरकार ने सुविवि में भूगोल विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. पीआर व्यास को जोधपुर के जय नारायण व्यास विवि में सिंडिकेट मेंबर नियुक्त किया है। प्रो. व्यास का कार्यकाल तीन साल रहेगा। वे इससे पहले सुविवि में चेयरमैन फैकल्टी ऑफ एजुकेशन रह चुके है। वे विवि में 35 साल अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

चरणपादुका स्थापना

उदयपुर। दादुपंथ के पीठाधीश्वर गोपालदास महाराज ने आरएनटी मेडिकल कॉलेज परिसर स्थित दादुपंथ के संतों की छतरियों के संरक्षण की आवश्यकता बताई है। उन्होंने यहां छतरियों में दादुपंथ संतों की चरण पादुका स्थापना की। उन्होंने कहा कि 43 ज्ञानी चेलों और करीब 300 ज्ञात-अज्ञात लेखकों द्वारा संकलित दादुवाणी भारतीय संस्कृति की धरोहर है। दादुद्वारा के महंत डॉ. हेमंत स्वामी ने बताया कि ढाई सौ वर्ष पुरानी इन छतरियों पर 40 वर्ष बाद पंथ प्रमुख का पदार्पण हुआ। इस अवसर पर जलदीप स्वामी, मालतीमाला स्वामी, महंत नरपतराम, केशवदेव स्वामी, उप महापौर पारस सिंघवी, कांग्रेस नेता पंकज शर्मा, बार एसोसिएशन अध्यक्ष मनीष शर्मा सहित बड़ी संख्या में दादु सम्प्रदाय के भक्त उपस्थित थे।

सामुदायिक शिक्षा से ही विकास : सारंगदेवोत

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के

साकरोदा स्थित जन भारती केन्द्र पर गत दिनों विश्व साक्षरता दिवस तथा विश्व फिजियोथेरेपी दिवस पर आयोजित संगोष्ठी एवं नि:शुल्क चिकित्सा शिविर की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से ही मेवाड़ के सुदूर आदिवासी अंचलों में जागरूकता लाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि फिजियोथेरेपी में नई तकनीकों के आने से गंभीर बीमारियों के रास्ते खोजे जा रहे हैं, इसमें नवीनतम शोध नई तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। मुख्य अतिथि डॉ. देवेन्द्रसिंह राव ने कहा कि इंजरी सिर्फ खिलाड़ियों को ही नहीं आमजन को भी हो सकती है। प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र मेहता, डॉ. प्रज्ञा भट्ट एवं आरूषि टंडन ने विचार रखे। स्वागत केन्द्र प्रभारी राकेश दाधीच ने दिया।

अधिवक्ताओं का सम्मान

उदयपुर। सनाढ्य समाज साहित्य मंडल ने भारत के 9वें राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा की103वीं जयंती पर अधिवक्ता दिवस के रूप में मनाई। 11 अधिवक्ताओं को अधिवक्ता शिरोमणि अलंकरण से सम्मानित किया। मुख्य अतिथि नकुल देव शर्मा थे। विशिष्ट अतिथि सुरेशचन्द्र द्विवेदी, शरद दशोरा, मुकेश त्रिपाठी व डॉ. सतीश तिवारी थे। अध्यक्षता अंबालाल सनाढ्य ने की। प्रवक्ता डॉ. अनिल शर्मा ने बताया कि समारोह में वरिष्ठ अधिवक्ता नकुल देव शर्मा, सुरेशचन्द्र द्विवेदी, शरद दशोरा, गगन सनाढ्य, प्रदीप कुमार शर्मा, विनोद पालीवाल, मुकेश त्रिपाठी, डॉ. सतीश चन्द्र तिवारी, विनोद पालीवाल, राजेन्द्र कुमार सनाढ्य, अरविंद त्यागी, लता शर्मा को सम्मानित किया गया।

डॉ. शर्मा राज्य नोडल अधिकारी

उदयपुर। मदन मोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के डॉ. किशोरीलाल शर्मा को आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग आयुष मंत्रालय ने राज्य नोडल अधिकारी नियुक्त किया है।

धाकड़ को विशिष्ट सेवा सम्मान

उदयपुर। विज्ञान समिति के 63वें स्थापना दिवस पर कंम्प्यूटर शिक्षा, पर्यावरण और समाज सेवा के क्षेत्र के उल्लेखनीय कार्य करने के लिए समाजसेवी डी.पी. धाकड़ को विशिष्ट सेवा सम्मान प्रदान किया गया। धाकड़ ने राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और गुजरात में आईआईसीटी कम्प्यूटर इंस्टीट्यूट के 155 सेंटर के माध्यम से एक लाख छात्रों को प्रशिक्षण देकर व उपलब्ध कराकर एक कीर्तिमान बनाया है। वहीं बेदला माताजी स्थित धाकड़ गार्डन में धाकड़ ने 300 नीम सहित अन्य औषधीय व फलों के पेड़ और पांच हजार फूलों के पौधे लगाकर पर्यावरण क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

सक्का का 'कृष्ण झूला' ट्रम्प वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय हस्त शिल्पी इकबाल सक्का द्वारा निर्मित सबसे छोटे झूले को ट्रम्प वर्ल्ड रिकॉर्डर्स में दर्ज किया गया है। स्वर्ण निर्मित सूक्ष्मदर्शी लेंस की मदद से देखे जाने वाला कृष्ण झूला तीन गुना तीन मिलीमीटर है तथा इस झूले का वजन मात्र 200 मिलीग्राम है। ट्रम्प वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के मुख्य प्रबंधक मुक्ता प्रताप ने भारतीय कार्यालय चैन्नई तमिलनाडु से सक्का को प्रमाण पत्र भेजकर सम्मानित किया।

दधीचि जयंती पर सम्मान

उदयपुर। महर्षि दधीचि सेवा संस्थान उदयपुर की ओर से महर्षि दधीचि जन्मोत्सव पर

आयोजित समारोह के समापन पर कोविड 19 के दौरान उत्कृष्ट कार्य के लिए अमेरिकन हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. कमलेश भट्ट , महाराणा भूपाल चिकित्सालय में कनिष्ठ ऐनेस्थिसिया विशेषज्ञ डॉ. विनोद दाधीच, पैसिफिक मेडिकल के राजेश शर्मा, राजेश दाधीच, दीपिका दाधीच व साक्षी शर्मा को सम्मानित किया गया। दाधीच समाज के अध्यक्ष सुधीर जोशी ने बताया कि विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी अतिथियों ने पारितोषिक प्रदान किए तथा समाज के वरिष्ठजनों को शॉल, माल्यार्पण एवं श्रीफल प्रदान कर अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. प्रीतम जोशी, राधेश्याम दाधीच, सुरेश व्यास, शशि जोशी, रूचि व्यास, डॉ. दीपक व्यास सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य लोग मौजूद थे।

मधु सरीन सहायक ब्रांड एम्बेसडर

उदयपुर। रोटरी अंतरराष्ट्रीय निदेशक ने आठ राज्यों में मधु सरीन को बालिका

सशक्तिकरण के लिए सहायक ब्रांड एम्बेसडर नियुक्त किया है। रोटरी अंतरराष्ट्रीय जोन-4 के डायरेक्टर महेश कोटबागी और ए.एस. वेंकटेश ने बालिका सशक्तिकरण कमेटी का असिस्टेंट जोनल एम्बेसडर रोटरी मीरा की पूर्व अध्यक्ष मधु सरीन को नियुक्त किया।

सघन पौधरोपण

उदयपुर। वात्सल्य सेवा समिति की ओर से शहर में सघन पौधारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ रेलवे स्टेशन के सैकंड एंट्री गेट से किया गया। समिति अध्यक्ष प्रकाश अग्रवाल ने बताय ाकि पूरे शहर में विभिन्न स्थानों में छायादार एवं फलदार पौधे लगाए जा रहे हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रमोद सामर थे। इस मौके पर दिनेश भट्ट, धीरेन्द्र सचान, केके गुप्ता, माणक अग्रवाल, मदनलाल अग्रवाल आदि भी उपस्थित थे।

आंचल सम्मानित

उदयपुर। ड्रीम वर्ल्ड प्रोडक्शन द्वारा गत दिनों योजना भवन जयपुर में आयोजित कार्यक्रम में विश्व स्तर पर भारत का नाम रोशन करने वाली युवा जादूगर आंचल को राष्ट्र शिरोमणि सम्मान 2021 से नवाजा गया। इस कार्यक्रम में गायिका रमा पांडेय, गायक रूपकुमार राठौड़, फिल्म सेंसर बोर्ड की सदस्य अनुराधा सिंह, मेवाड़ युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर आनंदवर्धन शुक्ला सहित 10 विभूतियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में ड्रीम वर्ल्ड प्रोडक्शन के मुख्य संरक्षक डॉ. एच.सी. गणेशिया, संरक्षक मुकेश भारद्वाज, अध्यक्ष गिरिजा शर्मा, उपाध्यक्ष समृद्धि शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष पूजा राणावत तथा महासचिव वेद खंडेलवाल उपस्थित थे। संचालन अंकित खण्डेलवाल ने किया।

खन्ना द्वारा वंडर एकेडमी का अवलोकन

उदयपुर। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष सी के खन्ना ने पिछले दिनों दो दिवसीय उदयपुर प्रवास के दौरान वंडर सीमेंट क्रिकेट एकेडमी का अवलोकन किया। जिला संघ के अध्यक्ष मनोज भटनागर ने उनका पगड़ी पहना तथा एकेडमी के मुख्य कोच मनोज चौधरी, डॉ. प्रकाश जैन, यशवंत पालीवाल, मुकेश पालीवाल व हेमंत खटीक ने उपरणा पहनाकर स्वागत किया। खन्ना एकेडमी में मिल रही आधुनिक सुविधाओं तथा मैदान की खूबसूरती को देखकर अभिभूत हुए।

पुस्तिका का विमोचन

उदयपुर। सहस्र औदिच्य समाज के परिवारों की परिचय पुस्तिका का वर्चुअल विमोचन किया गया। पंडित विनोद बिहारी याग्निक ने पुस्तिका का संकलन किया है। विमोचन कार्यक्रम में राजस्थान औदिच्य महासभा के प्रदेश अध्यक्ष ओमप्रकाश दीक्षित, जयपुर से गुजराती ब्राह्मण समाज के महासचिव भारत भूषण दवे, उदयपुर के समाज अध्यक्ष लोकेश द्विवेदी, महासचिव डॉ. के.बी. शुक्ला आदि मौजूद थे।

गणेश चालीसा बुक रोल विमोचन

उदयपुर। चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने अपने द्वारा निर्मित 40 फीट लम्बी गणेश चालीसा का विमोचन करवाया। पुजारी महेश जोशी ने विमोचन बोहरा गणेश मंदिर में किया। इस मौके पर सुभाष नंदवाना, कमल सुहालका, मोहित नंदवाना व दीपक अग्रवाल भी उपस्थित थे।

अटल लैब का उद्घाटन

उदयपुर। नीति आयोग भारत सरकार द्वारा स्वीकृत अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना प्रतापनगर स्थित हैप्पी होम विद्यालय में की गई। इसका उद्घाटन अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक डॉ. गोविंदसिंह भारद्वाज ने किया। इस लैब की स्थापना से विद्यालय एवं क्षेत्र के अन्य विद्यार्थी विज्ञान की आधुनिकतम तकनीक का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक शोध की ओर अग्रसर हो सकेंगे। विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय विद्यालय प्रतापनगर के प्रधानाचार्य दिलबहादुर सिंह व हैप्पी होम शिक्षा प्रचार समिति के अध्यक्ष डॉ. देव कोठारी थे। अटल लैब की गतिविधियों के बारे में पार्थ अग्रवाल ने जानकारी प्रदान की। संचालन अकादमिक निदेशक डॉ. सुषमा अरोड़ा ने किया।

शेल्बी ऑर्थोपेडिक सेंटर का उद्घाटन

उदयपुर। अहमदाबाद के शेल्बी ग्रुप हॉस्पिटल की देश की पहली फ्रेंचाइजी शेल्बी ऑर्थोपेडिक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का मधुबन में विश्व प्रसिद्ध जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. विक्रम शाह ने उद्घाटन किया। उन्होंने बताया कि शेल्बी हॉस्पिटल ने देश की पहली फ्रेंचाइजी उदयपुर में खोल कर नए युग की शुरुआत की है। इस अवसर पर डॉ. भरत गज्जर, डॉ. सुशांत, डॉ. आशीष सेठ सहित अनेक चिकित्सक मौजूद थे।

डॉ. भंडारी व डॉ. कौशिक को बेस्ट टीचर अवार्ड

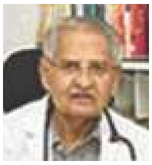

उदयपुर। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, दिल्ली की ओर से आयोजित समारोह में उदयपुर के भंडारी बाल चिकित्सालय के निदेशक व वरिष्ठ बाल चिकित्सक डॉ. बी. भंडारी तथा वरिष्ठ कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. एस.के. कौशिक को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान (नेशनल बेस्ट टीचर) से नवाजा गया। डॉ. बी भंडारी को राजस्थान में बाल रोग को प्रमुख विषय के रूप में पहचान दिलाने का श्रेय दिया जाता है। वह 1965 से 1996 तक पीडियाट्रिक्स डिपार्टमेंट के अध्यक्ष रहे। जीबीएच अमेरिकन हॉस्पिटल के वरिष्ठ कार्डियोलोजिस्ट डॉ. एस.के. कौशिक राज्य के ख्यातनाम कार्डियोलॉजिस्ट हैं। हृदय रोग क्षेत्र में उनके शोध देश-विदेश के कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी सबसे बड़ी देन वेदांता के सहयोग से एमबी हॉस्पिटल में हिंद-जिंक कार्डियोलॉजी हॉस्पिटल की स्थापना है। दोनों ही आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल पद से सेवानिवृत्त हुए हैं।

कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। जैन सोश्यल ग्रुप अर्हम की नवीन कार्यकारणी का पदस्थापना समारोह रानी रोड स्थित रोटरी बजाज भवन में हुआ। मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया थे व अध्यक्षता भाजपा कॉपरेटिव सैल के प्रदेश संयोजक प्रमोद सामर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में मेवाड़ रीजन के चेयरमैन मोहन बोहरा व फेडरेशन उपाध्यक्ष आरसी मेहता उपस्थित थे। संस्थापक अध्यक्ष आलोक पगारिया ने बताया कि नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष लादूलाल मेड़तवाल, उपाध्यक्ष महेन्द्र सिंघवी, सचिव प्रकाश सुराणा, सहसचिव रमेश डागलिया व कोषाध्यक्ष भगवती सुराणा सहित 11 सदस्यों का कार्यकारिणी सदस्य के रूप में कटारिया ने शपथ दिलाई। राज सुराणा, आर.एल. जोधावत, आलोक पगारिया, हिमांशु मेहता, सुभाष मेहता, जितेन्द्र हरकावत, हेमंत ओस्तवाल आदि उपस्थित रहे। संचालन राजेन्द्र सेन ने किया।

पंकज शर्मा का स्वागत

उदयपुर। देश की आजादी के 75वें स्वतंत्रता दिवस तथा बांग्लादेश की आजादी के युद्ध में भारतीय सेना की जीत की 50वीं वर्षगांठ के कार्यक्रमों को वर्षभर आयोजित करने के लिए गठित समिति में पंकज कुमार शर्मा को उदयपुर शहर संयोजक बनाने पर अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार एवं मीडिया संगठन उदयपुर की ओर से मधुबन स्थित कार्यालय पर राजस्थान प्रदेश के उपाध्यक्ष डॉ. खुर्शीद अहमद ने पगड़ी पहनाकर स्वागत किया। प्रवीण शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

गरासिया खाद्य निगम में सदस्य

उदयपुर। केन्द्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय ने उदयपुर के चुन्नीलाल गरासिया को भारतीय खाद्य निगम में दो साल के लिए सदस्य बनाया है। वे राजस्थान सरकार में जनजाति विकास व चिकित्सा राज्य मंत्री और अनुसूचित जाति जनजाति आयोग में प्रदेश उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। गरासिया अभी भाजपा एसटी मोर्चा में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी है।

प्रो. सोडानी राष्ट्रपति के प्रतिनिधि नियुक्त

उदयपुर। राष्ट्रपति ने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय अजमेर के पूर्व कुलपति प्रो. कैलाश सोडानी को लखनऊ के बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल में अपने प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया है। प्रो. सोडानी तीन वर्ष तक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे।

आलोक बने अध्यक्ष

उदयपुर। अणुव्रत समिति की बैठक मे आलोक पगारिया को अध्यक्ष मनोनीत किया गया। समिति के संस्थापक अध्यक्ष गणेश डागलिया, कैलाश 'मानव', निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. निर्मल कुणावत, सचिव डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी, सुनील खोखावत आदि बैठक में मौजूद थे।

सेवादल में नियुक्तियां

मोहब्बतसिंह राणावत

मदन पंड़ित

कौशल आमेटा

उदयपुर। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस सेवादल की प्रदेश कार्यकारिणी में राष्ट्रीय मुख्य संगठक लालजी देसाई की सहमति से प्रदेश प्रभारी महामंत्री विष्णुदत्त शर्मा व प्रदेश अध्यक्ष हेमसिंह शेखावत ने बड़ी के सरपंच मदन पंडित को प्रदेश सचिव, झाड़ोल (फ) पंचायत समिति के उपप्रधान मोहब्बत सिंह राणावत को देहात जिलाध्यक्ष व शहर सेवादल के अध्यक्ष पद पर कौशल आमेटा को मनोनीत किया है।

वर्ल्ड फिजियोथेरेपी डे मनाया

उदयपुर। सोसायटी ऑफ रिकोग्नाइज्ड फिजियोथेरेपिस्ट, उदयपुर ने गत दिनों वर्ल्ड फिजियोथेरेपी डे मनाया। अध्यक्ष डॉ. गौरव पाईवाल ने बताया कि इस अवसर पर उदयपुर में कार्यरत फिजियोथेरेपी चिकित्सकों ने मरीजों को नि:शुल्क परामर्श दिया।

डॉ. विजयम्मा अजमेरा को बेस्ट नर्सिंग टीचर्स अवार्ड

उदयपुर। पाली जिले में राजकीय कॉलेज ऑफ नर्सिंग उदयपुर की प्राचार्या डॉ. विजयम्मा अजमेरा को बेस्ट नर्सिंग टीचर्स अवार्ड से पुरस्कृत किया गया। राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन शहर के अध्यक्ष प्रवीण चरपोटा के नेतृत्व में प्राचार्या का अभिनंदन किया गया। संगठन के मीडिया प्रभारी प्रफुल्ल गांधी ने बताया कि इस दौरान सचिव पवन लोकेश अहारी, पुष्कर वीरवाल, सुरेश रोत आदि उपस्थित थे।

प्रो. दीक्षित को बेस्ट टीचर अवार्ड

उदयपुर। पारूल यूनिवर्सिटी, वड़ोदरा गुजरात की ओर से आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. महेश दीक्षित को जेके पटेल (फाउंडर प्रेसिडेंट) मेमोरियल बेस्ट टीचर अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें आयुर्वेद शिक्षा के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए किए गए प्रयासों के लिए दिया गया।

शर्मा संयोजक, सोनी सह संयोजक

उदयपुर। महात्मा गांधी जीवन दर्शन समिति के जिला संयोजक पंकज कुमार शर्मा ने उदयपुर शहर में कार्यक्रमों के सुचारू क्रियान्वयन के लिए उमेश शर्मा को उदयपुर शहर संयोजक और भगवान सोनी को सह संयोजक नियुक्त किया है। इनके सहयोग के लिए नौ सदस्यीय कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति भी गठित की गइ है। समिति में उस्मान खान, कपिल वसीटा, महेन्द्रसिंह देवड़ा, सुभाष चित्तौड़ा, भगवती प्रजापत, आशीष लुणदिया, विधुशेखर त्रिवेदी, नीरज शर्मा और लोकेश गखरेजा को मनोनीत किया गया है।

प्रदेश महामंत्री बने दुर्गेश

उदयपुर। विप्र सेना उदयपुर संभाग की बैठक फतहपुरा में हुई, इसमें प्रदेश प्रभारी दिनेश शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष नरेश कुमार शर्मा ने कार्यकारिणी विस्तार करते हुए प्रदेश महामंत्री पद पर दुर्गेश शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष गजेन्द्र चौबीसा को नियुक्त किया। साथ ही उदयपुर लोकसभा अध्यक्ष निर्मल पंडित ने मोहनलाल शर्मा को उपाध्यक्ष नियुक्त किया।

डॉ. छतलानी को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ में कार्यरत डॉ. चन्द्रेश कुमार छतलानी को वर्ष 2021 के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक (वरिष्ठ श्रेणी) का राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुआ है। यह सम्मान उनके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के फलस्वरूप प्रदान किया गया है।

शोक संवेदना

जयपुर। वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री ऑस्कर फर्नांडीज का 13 सितम्बर को मंगलूरू (कर्नाटक) में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी व दो संतान है। उनके निधन पर कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंदसिंह डोटासरा ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

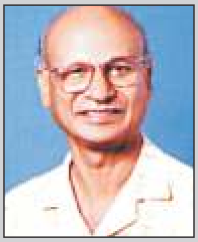

उदयपुर। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं कला मर्मज्ञ जनाब रियाज तहसीन साहब का 18 अगस्त को हृदयाघात के कारण इंतकाल हो गया। वे ना केवल राजस्थान बल्कि कला एवं साहित्य के क्षेत्र में अपने अविस्मरणीय कार्यों के कारण पहचान रखते बल्कि भारतीय लोक कला मण्डल के पूर्व मानद सचिव एवं वर्तमान उपाध्यक्ष भी थे। उनके पिता स्व. तफस्सुल तहसीन उदयपुर नगर पालिका में कार्यवाहक अध्यक्ष रहे थे। तहसीन ने विद्याभवन संस्था में 3 कार्यकाल तक अध्यक्ष के तौर पर तथा भारतीय लोक कला मण्डल में अनवरत 35 वर्षों तक मानद सचिव के पद पर सेवाएं दी। वे अपने पीछे शोकाकुल पत्नी सकीना बानू, पुत्री सबा कपूर, नवासा साहित, नवासी प्रिशा व सनाह सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। पूर्व विधायक त्रिलोक जी पूर्बिया की धर्मपत्नी श्रीमती मंजुला जी पूर्बिया का 19 अगस्त को निधन हो गया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, सीडब्ल्यूसी मेंबर रघुवीरसिंह मीणा, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी, निवर्तमान कांग्रेस शहर जिला अध्यक्ष गोपाल शर्मा, निवर्तमान प्रदेश सचिव पंकज कुमार शर्मा, पार्षद फिरोज अहमद शेख आदि ने शोक जताया है। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र नरेन्द्र, पुत्री किरण सहित पौत्र-पौत्री व दोहित्र सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

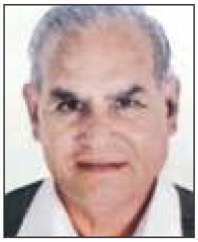

उदयपुर। श्री प्रेमचंदजी बड़जात्या (अनिल कम्प्यूटर्स) का देहावसान 27 अगस्त को हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमदेवी, पुत्र सुनील, अनिल व राकेश बड़जात्या सहित पौत्र-पौत्रियों का खुशहाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती कमला देवी सरूपरिया धर्मपत्नी श्री उम्मेदसिंह जी सरूपरिया का 27 अगस्त को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र हेमंत, पुत्रियां नीलम पामेचा, हंसा कावड़िया व कल्पना बापना सहित समृद्ध एवं संपन्न परिवार छोड़ गई है।

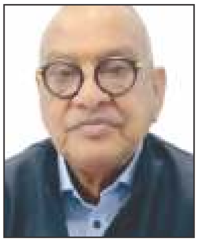

उदयपुर। श्री कमलप्रकाश जी खत्री (आर.के. केरियर्स इंडिया) का 12 सितम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती मधु खत्री, पुत्र मनीष व रनीष, पुत्री प्रीति सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए है।

उदयपुर। श्रीमती उमा माथुर (धर्मपत्नी स्व. श्री मोहन प्रकाश जी माथुर) का 1 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र शरद माथुर, बसंत माथुर, पुत्री सोनिया माथुर व पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री सहित संपन्न एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। श्रीमती शकुंतला व्यास धर्मपत्नी स्व. डॉ. राजशेखरजी व्यास का 26 अगस्त को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र राजेन्द्रशेखर व्यास (पत्रकार), सोमशेखर व डॉ. कुलशेखर व्यास, पुत्री राजश्री मेहता, भ्राता सनत जोशी, बहिन चन्द्रकला दवे सहित पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

बांसवाड़ा। श्रीमती प्रेमकुंवर जी राव (धर्मपत्नी स्व. श्री जसवंत जी राव) का 18 अगस्त को उनके आवास ग्राम सागवाड़िया में निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त पुत्र टीकमसिंह, गिरिराजसिंह, गोविंदसिंह (बांसवाड़ा शहर भाजपाध्यक्ष), पुत्रियां श्रीमती शारदा कुंवर, श्रीमती गेंदकुंवर व श्रीमती कलावती कुंवर सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। देशव्रती श्राविका श्रीमती गोपीबाई धर्मपत्नी श्री नारायणलाल जी गांगावत का जबलपुर में समाधिपूर्वक 23 अगस्त को गुरुवर विद्यासागर जी के सानिध्य में देह परिवर्तन हुआ। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र मनोहरलाल, मानमल, सीए जिनेन्द्र व पवन गांगावत, पुत्रियां श्रीमती इन्द्रा जेतावत, मंजू वक्तावत, पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। धर्मानुरागी श्रीमती अंजना कुमारी धर्मपत्नी श्री ख्यालीलाल जी बोहरा का 12 सितम्बर को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र महेन्द्र बोहरा, पुत्रियां पूजा सुराणा, विनीता दलाल, मंजू मेहता, लीना चोर्डिया व अनिता तलेसरा सहित पौत्र-पड़पौत्री, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

Lakxmikant Vaishnav
Director

We are Leading Manufacture and Supplier of
Minerals and Industrial Fillers
We serve Paint Industry, Paper Industry, Cosmetics and Plastics

M/s Colorex, Udaipur (Raj)
Rajasthan Clay, Sojay (Raj)
Rama Microns Pvt Ltd, Alwar (Raj)
Rudraksh Microns Pvt Ltd, Mysore (Karnataka) ....And More

- *Calcite Powder*
- *Dolomite Powder*
- *Talc / Soapstone Powder*
- *Mica Powder*
- *Silica Sand Powder*
- *China Clay Powder*
- *Barytes Powder*
- *Quartz Powder*
- *Color Sand Powder*
- *Feldspar Powder*

Rashtriya Chemicals & Minerals

101 & 201, Anand Plaza Complex, University Road, Aayad,
Udaipur - 313001 (Raj) Mob.: 9929099536
E-mail: lk.vaishnav@rediffmail.com www.rcmminerals.com

With Best Compliments
Dulux
Dharmendra Mandot
Director
A NAME OF TRUST
NAKODA
NAKODA
PAINTS & DECOR
THE TRUE COLOUR SHOP
Dulux
Once
Dulux
ENDURANCE+
Dulux
Dulux
100 Feet Road, Near SBI Bank, Opp. Ashoka Palace, Shobhagpura, Udaipur 313 004
Mob. : 98281 40456, E-mail : nakodapaints.udr@gmail.com

We prepare you For your Dream Job...
Your Dream our Aim, Your Success our Dream
श्रीनाथ बी.एससी. कॉलेज ऑफ नर्सिंग
आई.एन.सी. (18-27/3901) एवं आर.एन.सी. से मान्यता प्राप्त राजस्थान स्वास्थ्य विश्वविद्यालय जयपुर से सम्बद्धता
न्यूनतम योग्यता
12वीं पास (10+2) साईन्स बॉयोलोजी न्युनतम 45% (जनरल/ओबीसी) अंक एस.टी., एस.सी. (ST/SC) विद्यार्थियों के लिये न्युनतम 40% अंक न्युनतम आयु 17 वर्ष अनिवार्य है।
विशेषताएं :
कार्यक्षेत्र
केन्द्र/राज्य/ रेल्वे एवं सभी प्राईवेट सेक्टर व हॉस्पीटल में स्टाफ नर्स, कम्पाउंडर एवं नर्सिंग ट्युटर
छात्र एवं छात्राओं के लिये अलग हॉस्टल की सुविधा
आधुनिक प्रयोगशाला
बस सुविधा
अनुभवी शिक्षकों द्वारा अध्यापन
1800 पुस्तकों का पुस्तकालय
एस.टी.,एस.सी.,विद्यार्थियों के लिये छात्रवृति की सुविधा
आधुनिक कम्प्युटर लैब
LIC. मेडिकल बीमा
सरकारी एवं प्राईवेट अस्पताल में ट्रिनिंग
कार्यक्षेत्र
विदेश में स्टाफ नर्स का स्वर्णिम अवसर
COLLEGE BUILDING
प्रवेश प्रारम्भ
साक्षी प्लाजा, भीलवाड़ा रोड़, राजसमन्द
Ph. : 02952-230559,9414166737, 9982217777
e-mail : shreenathnursingcollege@yahoo.co.in

With Best Compliments
Jai Shanker Rai
Director
Ganpati
Infravision Pvt. Ltd.
प्रधान मंत्री
आवास योजना-शहरी
Pradhan Mantri Awas Yojana-Urban
मुख्यमंत्री
जन आवास योजना-2015
RERA APPROVED
REG. NO.: RAJ/P/2018/850
GANPATI GREENS
SHREE GANPATI AFFORDABLE HOMES LLP
AFFORDABLE HOUSING AT UDAIPUR
www.ganpatihousing.com
203, 2nd Floor, Doctor's House Complex,
Post & Telegraph street, Madhuban, Udaipur (Rajasthan)
Tel/Fax: 0294-2429118, E-mail: gipl.udaipur@rediffmail.com

WITH BEST COMPLIMENTS

BANSWARA

A Global Player in the Business of Fashion offering integraged Textile Solution to leading Brands World-wide & An Ideal Garment Solution Provider to Domestic & Global Readymade Brands

BANSWARA SYNTEX LTD

Regd. Office & Mills.
Industrial Area, Dahod Road,
BANSWARA-327001 (RAJ).
Ph. +91-2962-257680, 9549894601-2
Fax: +91-2962-240692
Email: info@banswarasyntex.com

Mumbai Office
Gopal Bhavan (5th Floor)
199, Princess Street
MUMBAI – 400002
Phone: +91-22-66336571-76
Email: info@banswarasyntex.com

Garment Unit:
Banswara Garments
98/3, Village Kadaiya
Nani Daman *(U.T.)*
Phone: +91-260-2221345, 2221505
Email: info@banswarasyntex.com

Surat Unit:
Plot No.5-6, G.I.D.C. Apparel Park
SEZ Sachin
SURAT–394230 (GUJARAT)
Phone: +91-261-2390363
Email: info@banswarasyntex.com

Visit us at :www.banswarasyntex.com